शिक्षक दिवस

१९७३

जूनां बेली :
नुवां बेली

सम्पादक :
शिवरतन थानवी
पुरुषोत्तम तिवारी

चिन्मय प्रकाशन

आमुख

राष्ट्र निर्माण के कार्यों में शिक्षक की भूमिका निर्विवाद है। समाज शिक्षक के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करने की दृष्टि से प्रति वर्ष **शिक्षक-दिवस** का आयोजन करता है।

शिक्षा विभाग, राजस्थान इस अवसर शिक्षकों का सम्मान कर उन्हें राज्य स्तर पर पुरस्कृत करता है और उनके कार्यकारी जीवन के सृजनशील क्षणों को संकलनों के रूप में प्रकाशित करता है।

इन संकलनों में शिक्षकों की क्रियाशील अनुभूतियाँ, साहित्य-सर्जना के अखिल भारतीय प्रवाह में उनकी संवेदनशीलता तथा उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक समकालीनता के स्वर मुखरित होते हैं और उन्हें यहाँ एकस्थ रूप में देखा और पढ़ा जा सकता है।

सन् १९६७ से विभागीय प्रवर्तन द्वारा सृजनशील शिक्षकों की रचनाओं के प्रकाशन का जो उपक्रम **एक** संग्रह के प्रकाशन से आरम्भ किया गया था, वह अब प्रति वर्ष **पाँच** प्रकाशनों की सीमा तक पहुँचा है। प्रसन्नता की बात है कि भारत-भर में इस अनूठी प्रकाशन-योजना का स्वागत हुआ है और उससे सृजनशील शिक्षकों की अभिरुचियों को प्रखरतर होने की प्रेरणा मिली है।

सन् १९७२ तक इस प्रकाशन-क्रम में २२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और उस माला में इस वर्ष ये पांच प्रकाशन और सम्मिलित किए जा रहे हैं :

१. खिलखिलाता गुलमोहर (कहानी–संग्रह)
२. धूप के पखेरू (कविता–संग्रह)
३. रेजगारी का रोजगार (रंगमंचीय एकांकी–संग्रह)
४. अस्तित्व की खोज (विविध रचना–संग्रह)
५. जूनां वेली : नुवां बेली (राजस्थानी रचना–संग्रह)

राजस्थान के उत्साही प्रकाशकों ने इस योजना में आरम्भ से ही पूरा-पूरा सहयोग किया है। इसी प्रकार शिक्षकों ने भी अपनी रचनाएँ भेज कर विभाग को सहयोग प्रदान किया है। इसके लिए लेखक तथा प्रकाशक दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है, ये प्रकाशन लोकप्रिय होंगे और सृजनशील शिक्षक अधिकाधिक संख्या में अगले प्रकाशनों के सहयोगी बनेंगे।

बीकानेर
शिक्षक दिवस, १९७३

निदेशक
र० सि० कुम्भट

अनुक्रम

कहानियाँ

कविताएँ

राजस्थानी कहानियाँ

अकाल ऊपरलो काल

रघुनाथसिंह

दिन बिसूजग्यो हो। अंधेरै माय सगली चीजां धुधली धुधली दिखण लाग ग्या ही। कालू आपरी गुवाड़ी मं धूणी बाल'र बैठो ही ज हो कै इतणै मं ही बारणै ऊड़तो रामू बोल्यो, "काका! कांई कररयो है?"

"कांई कररयो हूँ मौत सूं लड़रयो हूँ। पण दिसै है मौत छोड़सी कोनी।' कालू धूणी रै फूंक मारतो बोल्यो।

"काका! घबराणै सूं कांई होवै? भगवान पर भरोसो राख अर थ्यावस राख। मौत रा दिन बेगा हीज निकल ज्यासी।"

"भगवान रो तो भरोसो है ही रामू! बिना भगवान तो दुनियां पर कुण टिक सके है। पण थ्यावस कठै तांई करां! तू जाणै है धान निमड़्या तो मूदत होयगी, चार मीं-'ना पैली तांई तो मिणत मजूरी चाली, जिणसूं टाबरी पाली अर पाछै रोई सूं भूरट लाय लाय' र टाबरां रै पेटो मं गेरो। लोगां री लूट आगै कोई कांई रुक सकै? भूरट भी सामडीज ग्यो तो ऊँटां रो खाज लाणो हीज लाय लाय टाबरां रो पेट भरूं, पण यो काल ही कै महाकाल सूं भी बडो कोई काल है। लाणो भी सामडीजग्यो। अब लाणो भी कोनी मिलै। तू ई बता अब कियां पार पड़ै? धान रै दुःख रै साथै साथै पाणी रो भी घणो दुःख। पाणी भी नैड़ै मिलै कोनी। ओ भी दो दो कोस सूं ल्याणो पड़ै। मिनखां री आ हालत है, जानवरां री तो बात ई के? वै तो घणखरां सा'क गैलड़ी गेल्या जाता रैया। बस दो एक गावड़्यां बची ही, उण नै खुवावण वास्तै अब कीं कोनी। दो दिन पैला उणरो भी जेवड़ो काट दियो। घणो ही ज दुख होयो पण कांई करूं? गऊ री जाया नै भूखो मरणो कियां देख सकूं। जितणा दिन उण रो पेट भर सक्यो, राखी अब उण रो पेट नीं भर सक्यो तो भगवान रै भरोसै छोड़ दियी।" कालू आख्यां मं पाणी भरतो बोल्यो।

"काका ! काल् मौत रो ही नांव है पण दोरो सोरो काढ़णो ही पड़सी। थांरी तो झूंपड़ी भी टूटग्यो अर वाड़ घणी जूनी होयगी। लारलै दो तीन वरसां सूं करी नीं दिसै ? मांचा भी सै टूटग्या। यो देख एक मांचै रो पायों तो टूट ग्यो ही दिसै है। जट री जेवड़ीं सूं बांध' र काम चलारयो है ?" रामू हाथ लगातो बोल्यो।

"हां भाई ! लारलै चार वरसां सूं काल आपरो रंग दिखा र्‌यो है, तनै कै ठा कोनी ? झूंपड़ी विचारी बूढीजग्यी। गुवाड़ी री वाड़ क्यां सूं करतों भींटका नै वेच 'र तो पेट मं खायग्या। पेट री आग आगै मांचा री सुध किनै आवै ही ? लारलै केई मींना सूं एक ही ज जूण रोटी मिलै अर अव तो लाणो अर भूरट भी निमड़ग्यो, खावण नै कीं कोनी।" कालू चिलम झाड़तो बोल्यो।

"काका एक दो दिन मं फेमन रो काम चाल ज्यासी। मैं तनै काम पर लगा देस्यूं अर काकी नै भी सागै ही काम पर ले आये।"

"म्हांरै तो दिन उगता ही ज मुसकल मंड जासी। घरां धान रो दाणो ही ज नीं है, मजूरी भी मिलै कोनी भगवान रै भरोसै ही ज रात काटस्यां। ओ फिमन रो काम कद तांई चालसी रामू ? सुणां हां, वड़ा वड़ा मिनस्टर केवै है किण नै भी मरण नीं देस्या। वै बंगला माथै बैठा ही रोला करै है। चुनावां मं तो आठै पटरोल फूंक फूंक' र घाणा घाल दिन्या अब कठै निजर भी नीं आवे है। पिरजा तो भूख सूँ तड़फ र्‌यी है अर वै बंगला बैठ्यां ही रेड़ियां मं बोलै है किण नै मरण नीं देवांला पण सुण रामू ! पै, ली मरस्या कोनी, मरस्या तो उणनै मार' र मरस्या।" कालू थोड़ो उगस' र जोर री आवाज मं कैयी।" फेमन री बात चालता चालता दो मीं' ना होयग्या अर अब तांई काम शुरू होयो नीं।"

"अब दो' एक दिन में चालू हो जासी।"
"चोखो भाई, लोगा नै मजूरी मिलस्यी।"
"आछ्यो काका, उमार हो रयी है। मैं चालू हूँ।"
"चोखो भाई, म्हारों ध्यान राखजै।"

× × × ×

फिमन रो काम चालू होयग्यो। गांव रै आथूणं पासै जोड़ो खूदण लागग्यो। कालू अर उणरी घरहाली दोन्यूँ काम पर लागग्या। सैकड़ां लोग और भी काम पर लागर्‌या हा। केई मिनख जोड़ै नै खोदता अर केई मिनख कुण्डी भर भर' र वारै

पाल पर नाखता । कालू कुण्डी भर भर नाखतो जातो अर बात करतो जातो । बातां ही बातां में वो लोगां सूं कैवतो "भाई ! जो आपणो ही ज काम है, आपणों जोड़ो खुद ज्यासी, इन्दर राजी होसी, बादलियां घर्रासी अर मेंह बरससी । जोड़ो भर जासी अर आपां नै कितणो आराम होसी । मन लगाय' र काम करो ।"

मटकू बोल्यो" काका ! सरकार रो काम है इयां हीज चालसी, आला सूखा सै बलसी. कोई बाकी नीं रै सी । मर मिटैलो उण नै हीज बा' ई मजूरी मिलसी जो दूजां नै मिलसी । मरणै सूं कांई लाभ कोनी ।

"थांरी मरजी भाई, पण जीतणा पीसा लो उतणो काम तो करणो ही ज चाइजै ।"

लखा बोल्यो—"आ सीख थारै कनै ही राख ।"

"चोखो भाई ।" कालू कै' र आपरै काम पर जुट्यो रै' यो । उणरी बातां रो कालू पर कांई असर नी पड्यो । दोन्यूं जणां पूरै मन सूं काम करता रै' या ।

छठै दिन जद कालू अर उणरी घरहाली जिणरो नाम सोनी हो काम सूं घर लोट्या तो देखी कै उणरी दस बरस री छोरी रूगली ताप में मूंकडै है । सोनी छोरी री हालत देखता हीज ठण्डी होयगी अर आपरै धणी नै कै'यो "छोरी ताप में मूंकड़ै है कांई करां ?"

"कांई करां पैइसो कनै एक कोनी । वेद तो जाता ई पैइसा मांगसी, तड़कै तो हफ्तो चुकसी तो कीं बापरसी, पण अब कांई करां ?" काल या कै' र केई जणां कनै पैइसा वास्तै गयो पण सगला नटगया । देवै भी कठै सूं ?, काल सै नै मार नाख्यो हो ।

रात बड़ी मुसकल सूं आख्यां में नींद काढ' र काटी । दिनूगै पै, ली कालू फिमन रै सुपरवाइजर कनै भाज्यो भाज्यो गयो अर आपरो दुखड़ो रोयो ।

"मैं बिना हिसाब एक पैइसो भी नीं दे सकूं ।" कै'वतो सुपरवाइजर साफ साफ नटग्यो ।

कालू फेरू अरज करी "सा' ब एक ही ज छोरी है उणरो मुखड़ो देख ही ज जीवां हा । पारलै दिनां एक छोरी तो चालती रै' यी अब या भी भगवान री प्यारी होसी तो म्हांरो कांई हाल होसी ?" कैवता कैवता कालू री आख्यां में पाणी चिलकण लागग्यो ।

"छोरियां रो कांई घाटो है, एक म्हारली ले लीजै ।" सुपरवाइजर मजा री मूढ़ मं बोल्यो ।

"साव आप मजाक करो हो, म्हारै जान री लाग र्‌यी है ।"

"तो जा, पैइसा तो संझ्यां ही मिलसी । आ कोई बाणिये री दूकान कोनी पैइसा हिसाव सूं मिलसी ।"

कालू मुंह लटकांवतो आयग्यों, कांई जोर । घरां आ' र सोनी नै बोल्यो, तू रूपली कनै हीज रह । मैं एकलो ही काम पर जास्यूं । दुष्टां मजूरी भी दी गोली गुटकों क्यासूं लाऊँ ? संझ्या मजूरी मिलसी जद ल्यासूँ पण या सूँ भी घणी बीमार है, आथण पकड़ीसी भी-'क नी ।" कालू री आख्यां म भर आयो पर मन न ध्यावस देय रै काम पर आयग्यो ।

संझ्या रै सै लोग मजूरी लेवण वास्तै भेला हुआ । सगला रा गूँठा अर हाजरी बताई तो कालू बैठ्यो ही बोल्यो आ कांई बात है म्हारी पांच ही कियां है ? सात दिन काम पर पूरो आयो हूँ । लेखूड़ो काम पर दो ई दिन हो उणरी भी पाँच ? या के धाधली है ?"

"ठै' र काका ! रोला क्यूं करै ! तनै सै बता देस्यू" रामू बोल्यो ।

"यो गुवार कुण है ? इयाकलै नै काम पर नीं लाणो हो, सारी पोल देसी ।" सुपरवाइजर रामू सूं धीरै सी कैयो ।

"मैं समझा देस्यू सुपरवाइजर साहब, कोनी करसी ।" हफतो चुकावण ल तो कालू बोल्यो "सरकार जिस्या ही उणारा मुजारा । सै रै खावण री वास्ते र्‌यी है । मैं तो पूरी सात दिन री मजूरी लेस्यू ।" कालू ई धाधली में छोरी बीमारी नै ही ज भूल र्‌यो हो ।

सुपरवाइजर जोर सूं बोलो "रोला क्यूं करै है, थाँरी पूरी मजूरी ही देस्य पैली ओरां नै तो सलटाण दे,पाछै आपणो सलटावो करस्या । थोड़ो ध्यावस राख बात सुण' र कालू एक कानी बैठग्यो । बैठ्या बैठ्या छोरी री याद आई अर सोच लाग्यो, दुष्ट उमार कर र्‌या है । जे वा जीवंती नीं मिली तो ? दुष्टां रो मुंह बाल जे पांच दिनां री ही ज मजूरी ले ज्यावतो तो छोरी री दवा दारू करतो । कदे राखस म्हाँरी पूरी मजूरी ही नीं गिट जावैं । इयाँ सोचता सोचता जद उण विचारां रो तांतो टूट्यो जद तक सारा मजूर मजूरी लेय गेलै लाग्या ।

कालू बोल्यो, "लाओ सा'व अब तो दो म्हाँरी मजूरी ।" सुपरवाइजर बो "किसी मजूरी ? म्हें तो चुकादी, ओ देख थांरो गूंठो है ।" सुण र कालू रा ह

उडग्या अर बोल्यो—"सा'ब इयाँ क्यूँ लाकँ लगाओ हो ? गूंठो तो यो रामूड़ो पैली ही ज करा लियो हो । म्हाँरी मजूरी दी कोनी, चाहे इनै पूछलो । पण रामू रो काम तो सुपरवाइजर री हाँ मं हाँ मिलाया चालै हो सो वो जीवती माखी गिटग्यो अर बोलो, काका ! झूँठ क्यूं बोले मजूरी तो तनै सात दिन री दे दी ।

"अरे, भगवान ? थांरै राज मैं यो कांई इन्याय हो र्‌यो है चोर तो रात नै चोरी करै अर ये धोलै धोफारां ही ज लुट र्‌या है ।" कालू भगवान री ओर हाथ जोड़तो बोल्यो ।

"थांरो न्याय भगवान ही करसी ।" कैवतो सुपरवाइजर चाल पड़यो अर पाछै पाछै रामूड़ो ।

कालू गाल काढतो आपरै घरां आयो तो ठा पड्यो क' छोरी आखरी सांस गिण र्‌यी है । कालू सोची छोरी बचै कोनी । लुटेरा मजूरी भी कोनी दी ।

" बोलो बेटी रूपी ! बोल तो सरी । मेरी बेटी रै कांई हुयग्यो ।" बाप री वाणी सुण' र' रूपी आंख खोली. थोड़ी मुलकी अर आख्यां उठै री उठै रै गी । सोनी अर कालू दोन्यूं रो पड्या "बेटी चाली रे ! बे·······टी·······चा·······ली······· रे ।" अर क्षण में ही बेटी रा प्राण पखेरू उड़ग्या ।

एक रात सुपरवाइजर अर रामू बैठ्या बैठ्या दारू पीवै हा । सुपरवाइजर बोल्यो—"आपणो के बिगाड़ सकै है ! कलियो अड्यो तो छोरी मरगी पण बीं री ऐंठ गई कोनी । इब भी वो आपां नै गाल्या बकै अर आपणै खिलाफ परचार करै, घणो बदमास है ।"

"हाँ सा' ब ! सुणी है वो आज घरां कोनी ।"

"उण री रांड तो है ।"सुपरवाइजर गुटकियो लेतो बोल्यो ।

"हाँ, सा'ब वा तो अठै ही है" बात करतां करतां दोन्यां री अकल पर पथर पड्या अर बै कालू रै घरां पूगग्या । अर आधी रात न सोनी री झूपड़ी रा किवाड़ खड़ खड़ाया । सोनी समझगी, किवाड़ खोल्या कोनीं । पण मामूली सा किवाड़िया हा, जोर देता ही टूटग्या । सुपरवाइजर माय बड़ग्यो । सोनी झट खड़ी होयगी । पैली तो पइसा रो लोभ देय रै सुपरवाइजर सोनी नै भुलाई पण काम चालो कोनी तो जोरा मर्दी दोन्या उण री मरजाद बिगाड़ नाखी, आपरी खवास पूरी करी अर बठै गे भाजग्या ।

कालू दूजे दिन संज्या रै घर आयो तो गाँव मं चर्चा जोर पकड़ राखी ही । कालू नै ई बात रो टा पड्यो तो हक बको होग्यी । बींरो दुखड़ो भगवान पर टूट

पड्यो । बोलो, थांरै देखतां देखतां म्हारी लुगाई री मरजाद बिगड़ै तो अब जीणो धिरकार है मरणो ही ज चोखो । हाय राम अब मैं गांव नै किया मुंह दिखाऊँ ।"

इण बात रो कालू पर इतणो असर हुयो कै वो दुख रै माय घर सूं निकलग्यो अर गाँव सूं वां रै एक कुँए कनै पूग्यो अर आख्या मींच रै झट कुँए माय पड़ग्यो अर घणै जोर रो खुड़को हुयो ।

गांव में कालू री आत्महत्या री बात फैलगी । लोगां री जबानां पर आ बात चाल र्यी ही कै हद होयगी, इण सूं बड़ी कांई बात होसी ? धान रै काल सूं तो कियां दोरा सोरा दिन काढ र्या हा पण अै दुष्ट जो इयां लुगायां री मरजाद बिगाड़ै यो वी काल सूं भी मोटो काल है । इण काल सूं बचणै रो उपाय कोनी । इयां आपणो समाज दो कालां रै बीच पीसीजतो जा र्यो है ।

सूकेड़ा आंसू

मोहनसिंह

तीन साल पैलां मूलो गांव री गुवाड़ी छोड़'र आपरै खेत मांय वसगो हो। क्यूं जगां रो सांकड़ेलो, क्यूं पड़ोस्यां री कुचरणी अर क्यूं रोज-रोज रो ओलमो। तंग आयर मूलै खेत मांय एक झूंपो बांध्यो। ओ झूंपो ही मूलै रो घर हो। गांव हाला ई नैं मूलै री ढाणी कैवता। कई दिनां ताणी तो बै मसखरी कर्‌या करता कै ईं खेत मैं मूलो कांई कांई करैलो? चार बीघा टूकड़ो है, वसैगो कै दाणां वावैगो।

मूलै रो गुजारो खेती रै पाण कांनी होवतो। बै मजूरी करता। सूंडियो दो रिपियां सूं ले'र चवन्नी ताणी री मजूरी लियावतो। सूंडियै री मां रैणी कैणी री लुगाई ही। पाड़ोसण्यां बीं री वात मान्या करती। वात आ ही कै वा कोई नैं काम ताणी नट्‌या कोनी करती। कोई कै गोवर-भारी कर देवती, कोई की करस ल्या देती अर कोई रो पीसणो पीस देती। लुगायां बीनैं छाछ घाल देती अर कदै कदै सीली वासी रोटी भी दे देवती।

घर मैं ईन मीन तीन पराणी हा। ठंडी वासी खायर आपरो काम चलावै हा। जिनगानी रा दिन पूरा करै हा।

बावड़ती साल काल रै धक्कै असा चढ्या कै खावै नै कुत्ता खीर। सेखावटी रै काल रो कांई कैवणो। रूंखा री आव काल रै साथै मांटी मैं लुक जावै है। मोटा-मोटा किरसा री पोल चौड़ै आ जावै है। असो ही काल ईंवार अठै पड़्यो। काल रै आगै नोखा चोखा आदम्यां धीरज छोड़ दियो। बिचारै मूलै री कांई ओकात ही जो टाणै बंसो। बां री जोड़ायत धापां स्याणी लुगाई ही पण काल मांय स्याणप चालै कोनी। घर मांय नावण ताणी नाज कोनी हो। मजूरी मिली कोनी। धापां गांव मांय जावती अर छाछ री हांडी भरा'र ले आवती। सिज्या नैं दो मुट्ठी बाजरो कूट'र छाछ मांय गेरती अर राबड़ी बणा लेवती। वा ही राबड़ी दोन्यूं जणा खा लेवता।

दूजै दिन दस बजे रो वगत हो। गांव रा पनरा वीस मिनख मूलै री झौपड़ी रै सामैं धापां री अरथी जचा रिया हा। अरथी सजा दी गई ही। वींरै पुराणें ओडणैं रो कफन वीनैं उढा दियो गयो। ओडणों पुराणो हो। वो जगां जगां सूं फाटण लाग्यो। मूलै सूं कोनी देख्यो गयो। झौंपड़ी रै लारनैं पूंच्यो अर आपरी आधी धोती फाड़र ले आयो अर आंवतां पाण वीं धोती नै वीं री अरथी पर नाखदी।

लोगां देख्यो। आखरी वगत भी वा पड़दै सूं जावै ही। मूलै भोत कोसीस करी। वो जोर जोर सूं फूट फूट रोवणो चावै हो पण रो ना सक्यो क्यूं कै आंसूं सूकीजगा हा।

——

कुणाल

ऐतिहासिक कहाणी

गोपाल राजस्थानी

भारत रै इतयास में असोक एक महान् सासक व्हिया है, इतयास रै पानां में उणां जैड़ी वीरताई, बल-विकरम अर तेज दूजै किणीं भी राजा में नहीं हुतो, पैल उणमें राज विस्तार री बहौत भूख ही, उण कलिंग माथै भारी चढ़ाई करदी, इण जुद्ध में दोनां कांनला अणगण सैनिक काल रै जबड़ां में पौंचग्या, नैंना अनाथ व्हैग्या, हजारों लुगाइयां विधवायां हुयगी। बुद्ध भिखु उपगुप्त रै मुजब असोक जद रणखेतां में पौंच्या तो धरती नैं लोई सूं तर देखी, कठैई धड़, कठैई सीस तो कठैई फौजियां रा हाथ-पग बिखरोड़ा पड़्या हा अर वांपै नरभाखी जिनावरां री गिद्द मचियोड़ी ही। सैनिकां नैं चिरलाटियां कुरलाट करता देख'र असोक रै हिरदै में उथलपुथल मचगी अर उण नै अपणें आप सूं सूग अर घिरणा आयगी।

इण दरसाव रै बाद असोक बुद्ध धरम नै अंगीकार कर्यो सत-अहिंसा अर बुद्धधरम में अपणीं सगली सगति लगाय दी, जिण असोक रै मन में राज री कांकड़ रै पसराव री भावना ही वोईज असोक पछै धरम री सींवां रै फैलाव में लागग्यो अर उवै बुद्ध धरम रो प्रचार जावा, सुमातरा, लंका, स्याम बोरनियो अर चीण देस तांई करायो।

असोक री बड़ी राणीं रो राजकुमार—कुणाल, फूटरापण री परतख मूरती हो। उणरी आंख्यां इती फूटरी ही कै उण समै सायत ई ज किणी दूजै री व्है। कुणाल विद्या रो भी सांचो उपासक हो, राग-रागणियां, ताल-लय में उवै वगत उणरी बिरोबरी रो बाजो बजैयो कोनी हो। उदैरी अरधंगा कंचणा भी उवै जैड़ी'र जैड़ी मनभावणी, हिरणां सी ही।

सौतल माँ तक्सरक्सिता कारणवस कुणाल सूँ रूसीजोड़ी ही, वो हर वगत उणरी बिगाड़ करण रै मौकै री चैस्टा में रैवंती ।

कुदर ग्रैड़ी करी कै तक्ससिला रै राजा साथै पड़ौसी राजा हमलो कर दीनों, दुस्मण सूं अपणों रूखाल रै खातर तक्ससिला नरेस महाराज ग्रसोक सूं मदत मांगी ग्रर घुड़सवार साथै समाचार करा दिया । ग्रसोक उण कागद रै बारै में राणीं तक्ससिला सूं स'ला करी, वो तो पैल सूं ईं कुणाल पै खार खाधोड़ी बैठी ही, उण नै ग्रवसर मिलग्यो । उण ग्रसोक नैं कयो "तक्ससिला री सायता र खातर कुणाल नैं भेज दिरावो, वो भी रणभोम रो कीं तुजरबो कर ग्रावैला । एक राजा रै वेटै नैं जुद्ध विगर जीवण रो ग्रसली तुजरबौ नहीं हुय सकै ।

राणीं री चाल चल पड़ी, ग्रसोक उणरी राय मानली ग्रर तक्ससिला रै रोलै नैं निपटावण सारूं उणरै राजा री मदत रै खातर, कुणाल नैं भारी कटकल समेत भेज दियो ।

वाप ग्रर राजा ग्रसोक रौ हुकम सिर माथै धारण कर नैं कुणाल तक्ससिला कानीं वईर व्हिया ग्रर ग्ररधंगा कंचण भी उणरै साथै चली गई ।

कुणाल रै वईर हुवण रै थोड़ा दिन वाद ईज महाराज ग्रसोक कांतरा व्हईग्या । उणरै पेट ग्रर माथां में दरद हुयग्यो, जीवण रौ कोई भरोसो कोनी रियो, केई वैद, हकीम, बुलाइजिया पण इलाज लागू कोनीं कियो । जणें राणीं तक्सरक्सिता खुद उणरी मांदगी रौ निदान करयो ग्रर रोगाणुग्रां पै टोटको कियो । जकैसूं वो ईं नतीजै पै पौंची कै मांदगी रा कीड़ा लसण रै रस सूं मरजावै है ग्रर राणीं ग्रसोक नैं दवाई रै रूपमें लसण घोट-घोट'र पावणों सरू करयो जिणरै फलसरूप रोगाणूं मरग्या, ग्रर महाराज ग्रसोक री तवीत सुधारै पै ग्रायगी, उणरौ जी सोरौ व्हईग्यो । ग्रसोक, तक्सरक्सिता री टेल-चाकरी सूं वहौत राजी हुया ग्रर राणीं नै मन चाई चीज देवण रौ वाचौ दियो

राणीं कियो -"महाराज ! ग्राप इतै वड़ै देस रो राज किया चलावो ? ग्रर इत्ती वड़ी जवावदारी किण तरै निभणौं में ग्रावै है ? हूँ राज भार री ईं जवाबदारी री तुजरबो करणौं चावूं इण कारण ग्राप म्हनै एक दिन रै खातर राजसत्ता सूंप दो । वादै रै मुजव ग्रसोक उण नैं एक दिन रै खातर सत्ता संभलाय दी ।

राजरी सत्ता हाथों में ग्रावंतापांण तक्सरक्सिता राज री मौर छाप लगाय नैं एक कागद तक्ससिला रै राजा नै लिख दियो ।

"कुणाल देस री बहोत बड़ो गुनों कर्यो है। इण कारण उवैरी दोनूं आख्यां फोड़' र उणनैं देस री कांकड़ सूं काढ' र देस निकालो दे दियो जावै।"

तक्ससिला नरेश असोक री राज-मोर छाप आलो कागद देख्यो पण उणरी आंख्यां कुणाल री सरीफाईं अर फूठरी मूरत देख' र विस्वास कोनीं कर्यो, उण मन में सोच्यो आ कागद सरासर फरजी है। कुणाल कोई भी अैड़ो अपराध करै जैड़ो मिनख कोनीं। उणीं समैं उण जाय नैं कुणाल नैं सगली बिगत कैय सुणाई अर अपणीं राय जायर करी कै औ कागद हराल खोटो है, हूँ तो ईं नै मानण नैं त्यार कोनीं।

महाराज, असोक म्हारा जामीं ! उण री हुकम नहीं मानणों आ गद्दारी अर अनीति है। इण कारण हूँ कैवं हूँ कै इण माथै पाटलिपुत्र री मोरछाप लाग्योड़ी है इण कारण राज री हुकम बजावणों आपणों धरम है। ये जे आग्या पालण नहीं करोला तो आ बेजा बात व्हैला, इण कारण हूँ आप नैं कैवूं हुं कै ये म्हारी आंख्यां फोड़ाय' र मन्नें जावण दो, अर हूँ अबार बईर हुय जावूंला।

कुणाल उणीं ज बगत अपणीं आंख्यां में लोखण रा तपियोड़ा ताकला खोय दिया अर अरधंगा कंचणा समेत देस निकाले रै खातर बईर व्हैग्यो।

कंठ उणरो सुरीलो हो ईज, हर जगा संगीत कला रै कारण उवैरी खूब आव भगत हुवंती। घूमतो-भटकतो अचेतै में, केई बरसां रै बाद एक दिन पाछो पाटलि-पुतर पोंचग्यो अर गावंतो-बजावंतो राजरी गजसाला रैं सरदार खनैं जा पोंच्यो।

सरदार इण सूरदास जोड़ै री रागणीं पै मोईत हुयग्यो अर उण कुणाल-कंचण रो खूब आदर-सत्कार कर्यो वांनैं आसरो दियो।

कुणाल-कंचण समेत गजशाला पें रातीपासो लियो अर पीलैंक बादल री वेला, भैरवी राग री ताण छेड़दी। उण बगत महाराज असोक ध्यान लगावैं हा। उण आ जाणीं-पिछाणीं-मधुरी राग सुणीं तो उणांरै हरदै कमल में अनुराग. अर जिग्यासा ऊनी कै औ गवैयो कुण है ?

एक पोरेदार नै बुलवाय र असोक उण गवैयै नैं सवार रा हाजर करण रो हुकम दियो। सूरज उगतापांण दरवाण गजसाला कानीं ग्यो अर कुणाल नैं कंचणा समेत असोक रै दरबार में हाजर कर्यो।

म्हूँ थांरी संगीत कला रै अभ्यास सूं घणों राजी हूँ। थांरौ परिचय बताओ, असोक कुणाल नै पूछ्यो कारण कै इण सूरदास री हालत में दोनां नैं कोई कोनीं ओलख सक्या।

महाराज! हूँ तौ बुद्धभिखु हूँ अर औ भिखुणी है म्हारी जोड़ायत।

पण इणसूं पैल थे कांई हा?

म्हारो नाम कुणाल है, म्हूँ महाराज असोक रौ मोभी हूँ। अर आ है कंचणा।

"कुणाल" नाम रौ उच्चारण सुणतापाण महाराज असोक रै हिरदै में दुखरौ दरयाव छलछलावण लाग्यो अर नैणां सूं नेंह रा टोपा बरसण लागा अर खुसी री लैंरां भी हिलोला लेवण लागी कै मुदत रै बाद आज उणरौ गमियोड़ो बेटौ अर बऊ पाछा मिलाया।

थांरी औड़ी हालत कींकर हुई बेटा?

पाटलिपुतर रै राज-हुकम रै कारण।

असोक रौ हुकम? उणरौ माथौ भुईंजग्यो।

हाँ भगवन्।

वो निरभागी असोक तौ म्हूँ ईज हूँ पण म्हैं तौ औड़ौ हुकम आज दिन ताईं कदैई दियो कोनीं जठै ताईं मन्नैं याद है।

मगध देस रै राज री मौर छाप देख' र भी तक्ससिला-नरेस उणमें संसै कर्यो हो पण राज आग्या रै पालण रै खातर म्हैं वाँ सूं अरदास करी ही। आ बात सुणतांपाण असोक नैं याद आई कै उण राणी तक्सरक्सिता नैं एक दिन रै खातर सासन री जबाबदारी सँभलायी ही। अर हुवो चायै भली मती पण आ उवैरै ईज कुलखणां रौ परिणाम दिखै। अर महाराज असोक पछतावै रै साथ आपणें दोनां हाथाँ सूं माथै पै भचीड़ लियो।

असोक उणींज बगत राणीं तक्सरक्सिता नै तेकीकात रै बगा हेलो पाड़ियो, राणीं खुद उणीं बगत आई अर अपणों अपराध कबूल कर लियो। नटणै री तौ सवाल ई कोनीं हो।

"ईरसा रै कारण म्हैं ईज कुणाल री आँख्यां फुड़वाई ही, इण दोनां रै दारुण दुख री कारण म्हूँ ईज हूँ, म्हैं अभागण वडो भारी अनर्थ कर्यो है।" महाराज असीक रीस रै कारण तिलमिलाइजग्या अर तक्सरक्सिता नैं घाणीं में पिलवावण री हुकम दे दियो। जलाद उवै री वधकरण नैं, उवै नैं ले'र वईर ह्विया पण कुणाल अपणीं छोटी मां नैं जीवण दान देवण री महाराज असोक सूं विणती करी। जणें असोक उणनें माफी दे दी। इण तरै वदलै री भावनां रै त्याग सूं कुणाल नैन्हीं मां तक्सरक्सिता री जांन बचाय ली।

जूंनो बेली नुंवो बेली

मोहन पुरोहित 'त्यागी'

'मेवड़ले री छींट्या हमें थोड़ी मोलि पयरण ढूकी म्हूं घणी ताल सुधी इणरे थमण री बाट उडीकतो बारे आयो तो जोयो हवा हवले हवले ठण्डी ठण्डी चाल री है आभे में वादल रूई रे गोटों ज्यूं अठी उठी थपीड़ा खाय रीया हा म्हू कुदरत री इण लुका छिपी ने जोय रीयो हो के घर म.हें सूं मां रे करींगण री आवाज सुणीजी ।'

मोय जाय जोयो तो ठा पड़ी के आज मां री तबियत घणी खराब है । मोंचे हेंठ लोही री हेक उल्टी होवोड़ी ही । दो महीणा पेलां वी ऐड़ी हेक उल्टी व्ही ही । मू दौड्यो दौड्यो वैदराज जी ने बुलाय ला.ो घणी ताल तक तपास कर वे निदोण काढ्यो के डावो फेफड़ो घावों सूं घिरीजियोड़ो है इण वास्ते एक्सरे करवाय इण रोग रे विशेषज्ञ एम सी चौपड़ा सूं इलाज करावावणो ठीक रैसी । बाकी म्हूं तो हूं जेड़ो हाजिर हीज हूं । इन डाक्टर रो पूरो नोम महेन्द्र चन्द्र चौपड़ा है । आ सुणर मां री आख्यां में थोड़ी चमक आगी । वा बोली—'वैदराज जी ओ डाक्टर महेश वोहीज तो कोनी जीको गोरो थको है । दाहिने गाल माथे दाद रो निशोण है, कद में खटरो है । वैदराज जी होंकरता थका बोल्या "हां माजी वोहीज है पण थे वैने कद देख्यो ?" म्है वैदराज जी ने बतायो के महेश चन्द्र नोम रो एक साथी म्हारो बाल गोठियो हो । सुण्यो है अबार वो डाक्टर है । मां रो विचार है, होय सके वोइज होवे ।

पूछताछ करण सूं ठा पड़गी के म्हारो महेन्द्र इज अठे टी. वी. विशेषज्ञ रे पद माथे कोंम कर रीयो है । दूजोड़े दिन वैगोइज तैयार होय म्यूं महेश साब ने लेवण शफाखाने हाल्यो । मने जावती टेम मां भलावण देवती थकी बोली—"बेटा

महेशी ने केजे थने शहर में आये ने इता दिन होयग्या मां ने जोवण बी नी आयो। केजे मां ने थारी घणी घणी ओलूं आवे है।"

"हां मां म्हूं सँग के देस्यूं वैने थारी बिमारी री ठा कोनी ही नी तो कदै सती वो आय जांवतो। फेर बी देख लीजे वो नी आयो इणरी थैसूं माफी मोंगेला जा मां थूं सूय जा आराम कर म्हूं वैगोहीज वावड़" सूं आ केन वयीर हुयो।

डाक्टर सात्र आपरेसण सारूँ थियेटर में गियोड़ा है आप :इण वैंच माथे विराजो आ के'न एक वैंच माथे बैठण रो चपरासी मने इशारो कर्‌यो। घणी ताल तक म्हूं यूं ई बैठो रयो फेर एक पोने माथे म्हारो नोम पतो अने परिचे लिखर पर्चीयो चपरासी ने देतो थको वोल्यो—"ले भाया डाक्टर साव रे कुर्शी माथे बैठते ही ओ भिला दीजे। वो म्हारा जूना वालगोठिया है। चपरासी पानो हाथ में ले लियो।

म्हूं पाछो उणी वैंच माथे आय बैठ ग्यो अर वाट जोवण लागो के कणे चपरासी आवे र के के डाक्टर सात्र आयग्या। म्हूँ अगली होवण आली घटना रे मोंह अलूंजग्यो के डाक्टर साव म्हारो पानो जावेला अर दोड़ता थका आवेला अर केला वा भाई वा चिट भेज दी। क्यूं सीधी मोंह क्यूं नी आयग्यो, फेरूं म्हारो कुशल क्षेम, पूछेला इतरा दिन घरे मिलन नी आयो उण खातर भुक भुक माफी मोंगेला अर सफाई में कई दलीलां देला। म्हूं कूंला इण री कांई जरूत कोनी डाक्टर साव। आप मोटा मिनख होयग्या हो! जद वो मां रो पूछेला अर म्हूं उणरी बिमारी री बात काहूंला जणे तो वापड़ो पग में पगरखी बी नी घालेला। साथे दूर वयीर होंगी अर उण नेगा वणियोड़े मरीजां ने न्यायों ने काले हीज बी मिलगी।

चपरासी आय म्हारे विचारां ने भंग किया अर पानो टेबल माथे राखता थको अर डाक्टर साब रे थियेटर सूं बारे आवण री कयो। म्हूं हां भर पाछो विचारां में खोइज गो। जूनी बातां म्हारे नैणां चित्रपट ज्यूं आवण लागी।

हेक जमानों हूंतो जद म्हूं दसमी कलास में भणीजतो। साहित्य री प्रवृत्तियां में म्हारी रुचि ही। कहाणियां अर कवितावां पत्र पत्रिकावां में छपती रेवती। स्कूल री सांस्कृतिक समिती रो म्हूं अध्यक्ष हो। आसपास रा कई छोरा भणीजण खातर अठै आवता क्यूं के ओइज शहर उणरे नेड़ो हो।

गिण्यां रा मास वजीर्यां म्हूं जीमण जूठण सूं निरवालो होयन म्हारी अधूरी कहाणी ने पूरी करण खातर कल्पना रे सागर विचाले गोता खावतो। इणी टेम दरवाजे री खटखटाहट म्हारी कल्पना शक्ति ने भंग कीनी। बारे आय जोवूं तो एक

छोरो उभो है। इणने म्हूँ स्कूल में देख चुक्यो हो। म्हूँ दरवाजो सूं अलगो होय उणने मोंय आवण रो इशारो करतो थको बोल्यो—"

"आव भायला बोल, म्हारे जोग सेवा कार्य।"

वो मुलकतो थको बोल्यो "आजादी रे जलसे में आपरी कविता "आजादी रो डंको" सुणी मने घणी सखरी लागी। कालेज री गत साल री मेगजीण में छपियोड़ी आपरी काणी 'भील रे कड़खे' बाची, घणी चोखी लागी। म्हूँ वी इण रास्ते रो मारगू हूँ। म्हारी कीं छोटी मोटी रचनाओं है। आप इनें बाच कीं सुझाव दिराओ ला एड़ी उम्मीद कर रीयो हूँ।" म्है इण कोंम खातर म्हारी रजा दीनी। इण दिन रे बाद कई बार वो म्हारे घरे आय जावतो। वै आपरो परिचे दियो जिणसूं ठा पड़ी के वो वी पास रे गोंव खींचन में आपरी भूआ अर भूड़ साथे रेवे है। बाप अर मोंइ माँ ऊँटी में रेवे है। भूआ भूड़ रे कोई टाबर टींगर कोनी। वै इने इज आपरो बेटो करन मोने है। अठे वो गोंव रे चार छोकरों साथे रेवे है।

परिचे दिन दिन बधतो ग्यो। उणरी मोंई माँ री उणरे प्रति बर्ताव री कथा सुणर म्हारी माँ रे ममता रो मेल बूजण लागगो। एक दिन उण सूं बोली "महेश भूआ भूड़ खींचन रे है। थूं इयां छोरा भेलो रेवे है। क्यूं न म्हारे साथे इज रे जावे। म्हारे वास्ते जेड़ो महेश वेड़ो थूं। महेश वी मां रो केणो मानगो। उणो मोंन वी इ घर में उतोइज हो जितो म्हारे इ घर में जाये जलमियें रो हो। म्हारे भायजी जद बम्बई सूं कोट खातर कपड़ो भेजियो महेश रे वी म्हारे जेड़ो इज मेलियो। म्हारे मायतों ने यूं लागतो जोणे म्हे दोनों उणारी सरीखी संतोन होवों।

पण कुदरत नो इँण घर रो भलो को सुहायो नी। कोंणी रो काजल वी उणरी ऑख में खटकगो। अभागीये रा पग इण घर खानी पसरिया। भायजी री हृदय गति रुकणे सूं अकाल मौत व्हेगी। माँ रोती रोती आपरा नूर गंवावे ज्यूं कर दिया। म्हारे माथे परिवार रो बोझो आयो। भणाई छोड़ म्हूँ नौकरी करण ढूको। महेन्द्र अठारी पढाई पूरी कर ऊँटी चल्योग्यो।

कोई बाड़ा चौंठी रो व्यवार चालतो रेयो पण फेरूं बन्ध व्हेगो पछे ठा पड़ी के वो डाक्टर बणगो है। आज उण बात ने चौदह वर्ष व्हेगा।

भायजी रे गुजरणे रे दस वर्ष बाद मानाजी ने इण दुखदाई बिमारी आय दबोची। मां री बिमारी रो नोम सुणर नो म्हारी तो कालजे री कुली कुली कंपगी।

इणरी बिमारी रो अन्तहीज म्हारे जीवण रो ग्रंत है। इणी खातर म्हूँ म्हारे बाल गोठिये महेश-ना ना-डाक्टर महेन्द्र खनू इलाज करावण खातर आयो हूँ। अपरेसण पूरो होंवते ई अर म्हारी चिट जोंवते ई महेश हड़बड़ीज जासी अर म्हे सूं बाथे मिलर घणो दिनों सूं नी मिलण री कालजे री तपत ठण्डी करसी। चपरासी रे जोर सूं दरवाजो बन्द करण रो खड़को सुणर म्हारे विचारां रो तार टूटगो। दरवाजा बन्द कर'र वो अचरज सूं म्हारे खानी जोंवतो थको बोल्यो—"क्यूं सा आप अजे तक अठेइज बिराजो हो?" आ सुणर मने ऐड़ो लागो जोणे म्हारे हाथ रा तोता उड़गा हो। तो बी हिम्मत कर पूछ बैठो—"क्यूं भाया कांई हुयो?" वो मने हालण खातर इसारो करतो थको बोल्यो— "बाबूसा सफाखानो बन्ध हुयो ने आधो घण्टो व्हेगो" "अर डाक्टर साहब?" जद ओ म्हारो प्रश्न उवे सुण्यो तो अंगुली री सीध में देखण री कैतो थको बोल्यो— "डाक्टर महेश चन्द जी क्लब सांमी रमण री सारू जाय रिया है।" म्हैं पूछ्यो, "थें म्हारे बेलीपे रो परिचे....." वो बात काटतो बोल्यो—"हाँ हाँ हाँ, म्हे केयो पण डाक्टर साब बोल्या यूं तो केई जूना बेली आपरो बेलीपो काढ लेसी। म्हू किण किण री निगे राखूं। आ केन वै नुंवें बेलियो, वकील तहसीलदार अने थानेदार साथे खेलण सारू क्लब खानी परा गीया।"

चपरासी रे ए केणे सूं म्हारे विश्वास री हत्या व्हेगी। शरीर में एड़ो दर्द हवेगो जोणे सैकड़ो बिच्छुओं हेक समचे हीज डंक मार दिया होवे अर इण जैर रे फैलणे सूं जोणे ग्रांख्यो रे ग्राडा दिन दियाली रा तारा टिमटिमाय गीया हो अर जोणे म्हने वो केणी चावे—ओ डाक्टर रा धर्म भाई, उठ घरे हाल। डाक्टर साब ने ूने बेलियों री नही, नुवें बेलियों री जरूत है। थारी बिमार माँ ने देखण री उण मने फुरसत कोनी। घोड़ो घास सूं बेलीपो निभासी तो कांई खासी। माँ म्हारी वाट जोवती होगी। घणी ताल हवेगी है। म्हैं मण मण रे भारी पगों सूं घर खानी वयीर हुयो। माथे रे हाथ लगायो तो हाथ पसीने सूं भरीजगो। डील सारो छायपोणी व्हेगो हो।

आकाश में बादल छायोड़ा हा। उमस गेगी ही। थोड़ी ताल पछे झीणी झीणी बून्दो पड़गा लागी जिको धीरे धीरे मोटी मोटी बून्दो में बदलगी। वर्षा जोर पकड़गी ही। घरे पूगो जणे तक डील माथे पोणी रा अर पसीने रा परनाला वेवण लागगा हा। मेह रो पोणी पसीने रो पोणी अर आंख्यो सूं निकलण आलो पोणी हेकल मेकल होय परनालो हो ज्यूं चोटी सूं एड़ी तानी वयग हूको। भुंवाली आंवते आंवते घर में बेगो बड़ियो। मोहे सूं मां करीगरी आवाज में पूछियो—

"कुण सुरेश है रे ?"

म्हे ऑंसुओं रा घूंट पीवतां बोल्यो, "हाँ माँ ।" माँ फेरू पूछियो— "महेश बठे हो ?"

म्हे कयो—"हाँ माँ ।"

माँ रे भले आ पूछरणे पर कि महेश साथे आयो है, म्हैं भुंवाली जाय माँ री खाट रे खने हड़न्द देणों जाय पड़ियो ।

——

एक दन परवाते परवाते माड़साव के घरे एक टाबर आयो ! कजाणा कूण भेज्यो ! मीठो बोलतो टाबर आपणो परिचय दियो के पास का गाँव को रेवा वालो है, माँ बाप गरीब होवा सूँ पढ़वा लिखवा में घणीज मुश्किल पड़े ।

भणवा में चोखो होवा सूं सरकार पीस्या देती ही । जी सूं हायर सेकन्डरी तक तो भणग्यो, पण अबे आगे कई करे ? नम्बर अच्छा मल्या, कॉलेज में भर्ती होवा ने पीस्या को रोड़ो अड़ग्यो, थोड़ा होता तो दे भी देता, पण चार पांच सो रुप्या एक साथे कठै आवे ! विद्यार्थी होच्यो के की सूं कर्जो ले ले और फेर छोरा छोरयां ने भणार ट्यूशन करने चुका दूँगाँ !

विद्यार्थी टाबर री बात सुणी तो माड़साव घणा राजी होया । पीस्या म ड़साव कने तो नी हा, पण आपणा स्कूल का सहायता फन्ड म पाँचसो रोकड़ा रुपया को कर्जो लेईने ऊं विद्यार्थी ने दे दिया ! और माड़साव रो कर्जो तनखा सूं कटतो रेगा ।

ऊ विद्यार्थी टाबर पेली किस्त 50 रु० तो आगला मीना में लाई ने दे दीदा । दूसरी आगला मीना में चार पाँच दन के आगे पाछे जमा कराई दीदा । पण तीजा मीना सूं देर होवा लागगी ! मीनो खतम होवण आयो पण पीस्या जमा कोनी होया । माड़साव मन में होच्यो के भणवा वाला विद्यार्थी ने पीस्या का चक्कर में नी पड़नो छावे । पण वॉ की घर वाली गीता मजबूर कर दियो के छोरा कने जायने पीस्या की बात करे ।

माड़साव वाण्या बुद्धि नी हा । गांव का मिनखां सूं वां को अलग हीज रवैयो हो । पीस्या वाला माड़साव की आँख्या में ओछा ने चाल बाज हा ! स्वार्थी हा ! क्यूं कि घणा दना पेल्या की बात है, माड़साव का रिश्ता में वां का भाई बन्द एक दण पीस्या उधार लेवा आया । जो खास पीस्या वाला हा वां के मोटी बणजी बणयों हो, भाई बन्द जाणी ने माड़साव चार पाँच हजार को कर्जो आपणा नाम पे दिरा दियो ! माड़साव पाछो दो तीन दाण पीस्या को तकाजो भी कर्यो, पण बात ये वे होती री और माड़साव के माथा का बाल साफ होता र्या । लेवणवार गांव छोड़र बारणे रेवा लागग्यो और पछे माड़साव पीस्या वासते तकाजो भी नी कर्यो !

गाँव का पीस्या वाला वाण्या, सेठ लोगां की मुनीमगिरी कर कर ने पीस्या उतार्या ! ई बात की माड़साव कीनेई खबर तक नी लागवा दीदी !

घर की गली में मुड़याईज हा के माड़साव रा पाड़ोसी वालूरामजी रा वाऊ हाँमें मली। हाड़ी रा पल्ला में कई छुपाई राख्यो हो। वालूरामजी वणाराईज इस्कुल में चपड़ासी हो। ग्रौर पाछला मीनाऊँ घणा बीमार वेईर्या हा। वालू रामजी री वाऊ माड़साव ने पेचाण्या तो पल्लो हमारती तकी उबी वेईगी !

माड़साव पूछ्यो के लाड़ी। ग्रवे वालूराम जी रो जीव किस्तर है। ग्राख्यां नीची करने वोली। के पेल्यां वचे तो ग्रवे ठीक ठीक है। माड़साव वन्डे हाड़ी रा पल्ला में ठाम्वड़ा देखने बोल्या के ये ठाम्वड़ां केठे लेईजाईर्या हो ?

लाज्यां मरती तकी वालूरामजी री वाऊ वोली, के माड़साव ये टूटा फूटा ठाम्वड़ा है। जो मैं होच्यो के थोड़ा पीस्या ग्रोर देई ने नवा लेई ग्राऊँ।

ग्रचम्वा करता तका माड़साव वोल्या के देखां मने वतावतो !

वालूरामजी री वाऊ घवरावा लागगी कि कठेई पोल नी खुल जावे। पण वतावणाइज पड़्या। माड़साव देख्यो के चार पांच कटोर्या ग्रन एक दो गिलास-भाटाऊँ जगदी तकी ही माड़साव मन में हर्मजिया के या जाण वूझ ने तोड़या तका ठाम्वड़ा वेचीं ने दवांयाँ रा पया लेवा जाईरी है। बीजली री नेई माड़साव रा मन में धमाको व्यो ! ग्रौर भाटा री नेई उवा देखताई रेईग्या। हाली तक नी सक्या। ग्रौर वांलू रामजी री वाऊ ग्रागे परीगी। जदी माड़साव रो ध्यान टूट्यो तो थोड़ा दूरा-दूरा लाड़ी रे पाछे पाछे चाल्याग्या।

जो वात माड़साव होची वाईज वेईगी ! के लाड़ी ठाम्वड़ा वाला री दुकाने जाइने, पाछी पल्ले पइस्या वांधती तक ग्राई।

माड़साव रो मन खाटो वेइग्यो। माथा में पीड़ा वेवा लागगी, के म्हांरा मोयला री लुगाई म्हांरे हॉमे घर रा ठाम्वड़ा ठीकरा वेच री है !

माड़साव पाछा गेला पे ग्राइग्या। वालूराम जी री वाऊ पाचा माड़साव ने देख ने भेंपवा लालगी। पण माणसाव ठाम्वड़ा रे वासते पूछ्यो कोई नी। पण इतरी वात जरूर की के देख लाड़ो, म्हाँ थारे पाड़ोस में रेवाँ ग्रौर थाणाँ पाड़ोसी हाँ। थाणे कणी चीज री जरूरत वे तो घरे ग्राई जाणो चावे।

वालूरामजी री वाऊ री ग्राख्याँ में ग्राँसू ग्राइग्या। वणी रो मन गीलो वेइग्यो ग्रौर वोली, हाँ माड़साव।

जाती तकी ने फेर माड़साव क्यो के देख लाड़ी, टावरिया ने दुःखी मत राखजे । ग्रौर थारे पईस्या-कोड़ी कई भी छावे तो घरे ग्राईने गीता पाऊँ लेई जाजे ।

या वात माड़साव केई तो दीदी, पण पाछो होच्यो के गीता रे पाँय पया कठूँ ग्राया ! ज्यूई'-त्यूँई माड़साव घरे गया, ग्रौर गीता ने क्यो के छोरा के पया घरे भेजणा पड्या, जो देय नी सक्यो । ग्रबके मईना में देवा रे वासते क्यो है ।

माड़साव खाणो खायो ग्रौर ग्राराम करवाने कमर ग्राड़ी कीदी ही के ग्रतराक में वालूरामजी री वाऊ घवरावती तकी दोड़ती दोड़ती ग्राई ग्रौर वोली, माड़साव, माड़साव, झट चालो, ग्राप एक दाण चाली ने वणा ने देखलो ! वणा के कजाण कई वेइग्यो ! उवा वेई ने दवाई पीवतां पीवतां नीचे पड़ीग्या !

माड़साव चालो, झट चालो····

माड़साव झट पट माचा पूँ उठ्या ग्रौर वोल्या के ग्रच्छा ग्रच्छा थूँ चाल ! घरे चाल ! मूँ गावा पेर ने ग्राइयो हूँ !

लाड़ी परी गी जठा केड़े माड़साव ग्रागता ग्रागता गीता कने जाई ने वोल्या मावू री वाई, ला मने वीस पच्चीस रीप्या तो ला लाइ दे ।

गीता तो वड़फी ने वोली । ग्ररे थाने कई वेइग्यो है ! वीस रीप्या पड्या, वी भी थाने खटकर्या है ! वी कीने देई दोगा तो रोंट्यां कन्डे ग्रठे जीमवाने जावांगा !

ग्रागता ग्रागता माड़साव क्यो के झट कर । काले मूँ इस्कुल री समिति मूँ ग्रगाऊ रीप्या लेई ग्राऊँगा !

गीता रे वात हमज में नी ग्राई ग्रौर वोली कि ग्रगाऊ लाग्रोगा तो वी कस्या कमाई कीदा तका है ! वी उदार का पईण्या है जो तनखा मूँ परा कटेगा !

ग्रवे तो माड़साव ने गुस्सो ग्राईग्यो ग्रौर वोल्या थूँ ग्रवार माथा फोड़ मत कर ! पेल्यां रुपया लाय ने देदे !

गीता दरपगी नी चावती तकी भी रीप्या लाई ने दीदी ग्रौर माड़साव फाटी पगरख्यां पेरी दौड़ चाल्या !

बालूरामजी रा घर में धसतांई ने देख्यो के बीमार चपड़ासी माचा पूँ नीचे आय ने बेहोश पड़्यो है ! और बन्डी बाऊ बन्डा मुन्डा पे ठण्डों पाणी रा छांटा देईरी है अन रोती जाई री !

माड़साब पां जाई ने होशियारी ऊँ बालूराम जी री नाड़ी देखी, छाती पे हाथ फेर्यो अन दोई जणा मिली ने माचा पे हुवायो और बोल्या के देख लाड़ी थू ध्यान राखजे, मूँ डाक्टर साब ने हेलो पाड़ लाऊँ ।

बालूरामजी री बाऊ री आख्याँ फाटी रेईगी और रोती तकी बोली के डागटर साब फीस रा बीस रीप्या लेगा और म्हांरे पाँ तो ५ रीप्याईज है ।

थूँ फिकर मत कर भगवान् सब हाऊँ करेगा । मूँ अबार डाक्टर ने लेई ने आउँ और माड़साब रा पगाँ में जाणैं फंखा लागग्या ।

एक घड़ी खाण्ड केड़े........

माड़साब डाक्टर ने लाया देखीं देखाई ने दवा दीदी और बालूरामजी रा घर बारणे आया तो टेम रात री वेईगी ही । सड़क पे बीजल्यां जुपगी ही । पान वाला की दुकानां पे रेड़्या बाजरया हा । लोग आईर्या ने जाईर्या हा ।

माड़साब मन में दरपता तका जाइर्या, के गीता कईं केगा ? लड़ेगा ? पण आखिर है तो लुगाई री जात । अक्कल कठु लाघे । लुगायां थोड़ी लालची साभाव री वे है । जादा नाराज वेगा तो कई हँसी मजाक री वात करे ने राजी कर दूँगा ।

यूँ होचता होचता, चालता तकाँ माड़साब रा मन में एक सन्तोष री वात आईगी ।

के कुण कई साथ ले जावेगा !

क्षयग्रस्त

सांवर दइया

दिन ऊग्यो। पूरै बास माथै तावड़ो फैलण लाग्यो। बास रो अस्तित्व साफ दिखण लाग्यो। दोनूं कानी कच्चा घर। बीच रै रस्ते सूं रेलगाड़ी निकल्या करै। रेल री पटड़्यां सूं थोड़ी दूर तीन-च्यार फुट ऊंची भींत बण्योड़ी है। भींत पछै आउटर सिगल है। इन्नै सूं आवण आली गाडी अठै रुकै। बिना टिकट चालणिया अठै उतर जावै। टी० टी० भी आपरो हिसाब कर लेवै।

फत्तू भींत माथै बैठ्यो बीड़ी पीवतो हो। बींरा केस सूखी घास दांई खिंड्योड़ा हा। दाढ़ी बध्योड़ी ही। कपड़ा मैला-कच्च हा। बो कैई दिनां सूं न्हायो को हो नी। बो भींत माथै बैठ्यो कच्चै घरां नै देखतो हो। घरां रै आगै माचा बिछ्योड़ा हा। माचा माथै फाट्योड़ा बिछावणा हा। बां बिछावणा माथै सून रा बच्चा हा। कैई घरां रै आगै माचा खड़ा कर्योड़ा हा। बां रै लारै लुगायां न्हावती ही—पांचू कपड़ा पैर'र ! सड़क रै किनारै लाग्योड़ै बिजली रै थम्भै माथै एक प्लेट लाग्योड़ी ही। बीं पर लिख्योड़ो हो—थोड़ा टाबर घणो सुख....... घणां टाबर घणो दुख !

फत्तू नै कोई हेलो मार्यो। बीं चमक'र देख्यो। सामनै मंगतू ऊभो हो। बीं रै लारै मोडियो हो। तीनूं जणा चाय पीवण री सोची। फत्तू भींत सूं नीचे उतरग्यो।

बास में लोगां री हो-हा मच हुयगी। बात-बात मांय गाल्यां। घणीसीक लुगायां सफाई करण खातर गयी परी ही। भंगियां रो बास ठन्डोसोक दिखण लाग्यो।

तावड़ो धीरै धीरै चढण लाग्यो।

फत्तू आपरी पेटी लेर घर सूं निकल्यो। आपरी जागां पर आ'र बैठग्यो।

कोटगेट माथै भीड़ बधण लागी। वीं आपरी पेटी खोली। पालिस री डब्यां काढ़ी। ब्रुस रै केसां माथै लाग्योड़ी धूड़ साफ करी। अेक मैलोसोक पूर काढ'र बैठण री जागा बुहारी। वो ग्राहक ने उडीकण लाग्यो।

अेक आदमी आयो। बीं रै जूतां रै पालिस कर्‌यां पछै वो आपरी आदत रै मुजब बोल्यो–क्रीम लगाऊं, साब ?

–नहीं !

–क्रीम लगायां जूता काच दांई चमकेला ..।

–कित्ता पइसा दूं ?

–बीस ?

वो आदमी पन्दरै पइसा फैंकर चालतो वण्यो।

अेक छोरी चप्पल ठीक करावण नै आयी। बीं रै कनै सूं एक छोरो निकल्यो। आ कै'र–तूं वी चप्पल खरीद लै। तूं कैवै तो हूं दरा दूं....?

–थारी मां नै दरा दै....बापड़ी डोकरी उबराणी घूमती हुवैला। छोरी बोली।

फत्तू चप्पल ठीक करतो बोल्यो–अै छोरा बिगड्योड़ा हुवै ....अवूत कठैई रा।

छोरी मूण्डो मचकोड्यो। बोली कोनी।

बिन्नें साग-सब्जी बेचणियां रै गाड़ां कानी सुरसुराट होवण लागी। अेक पुलिस आलो सेंग जणां नै धमकावंतो आरैयो हो। जिकै गाडै मांयली जिकी चीज चोखी चोखी लागती, उठा'र आपरै थैले में डाल लेंव तो। कोई चीं-चप्पड़ करतो तो वो आख्यां काढ-र कैंवतो–घणी टें–टें ना कर। स्साले रो चलाण भर दूं ला। कचैड़ी रा चक्कर लगावतै लगावतै चपल्यां रा तलिया घसीज जावैला !

पुलिस आलो फत्तू कनै आयो। वो गुर्रा'र बोल्यो–अरे फत्तिया, पालिस कर।

फत्तू वीं रै काला जूतां माथै जम्योड़ी धूड़ साफ करण लाग्यो। पालिस री डब्बी खोली। पुलिस आलै नस झुका'र नीचे देख्यो। बिल्ली मार्का पालिस देख'र वीं रो पारो गरम हुयग्यो। बीं गाल काढी—मादर . म्हारै साथै भी चार सौ बीसी करै ...'चेरी' पालिस लगा ....

फत्तियो वीनै गाल्यां काढी—मन ही मन मांय। विल्ली मार्का पालिस री डव्वी ढक'र 'चेरी' री डव्वी निकाली। पछै क्रीम लगा'र जूता चमकाया। पुलिस आलो रवाना हुयग्यो। फूटी कोडी भी को दीनी वापड़ै नै। फत्तू वोल्यो—हुंह! हद हुयग्यी वेइमानी री....! सगलो देस लुच्चै लोगां सूं भरीजग्यो। स्सालो पुलिसियो कुत्तो....!

अेक छोरी सैण्डल रै पालिस करवा'र गयी। मंगतू वोल्यो-फतिया, तूं कांई देख्यो....।

—कांई ?

—आ छोरी स्कर्ट रै नीचै चड्डी पैर राखी ही।

—चुप स्साला।

—सची कैवूं....मजाक को करूं नी....।

—हांऽऽ यार, विलकुल साची है आ वात। मोडियो चासा लिया।

—धत् स्साला। झूठ वोलै। खा थारी मां री सोगन्ध।

मोडियो अोर मंगतू खीं—खीं कर'र हंसण लाग्या।

होटल रै आगै लाग्योड़ै पोस्टर नै देख'र फत्तू री आख्यां आगे फागली री सूरत नाचण लागी। फागली रै जोवन री याद कर'र वींनै झुरझरी आयगी। वो सफीयै साथै फागली रै घरै गयो हो। सफीयै अर फागली रै साथै खावण पीवण री वातां सगलै वास में हुवै। सफीये फत्तु नै 'कामशास्त्र' री वातां वतायी। चौरासी आसणां रा नाम गिणाया। न्यारै न्यारै आसणां रा न्यारा-न्यारा मजा! फत्तू नै लाग्यो कै वो मोट्यार हुयग्यो है!

\+ \+ \+

वै तीनूं चाय पी'र वारै निकल्या।

सिञ्झ्या हुयां पछै अन्धारो ईंयांईज उतरै, जाणै मोमवत्ती सूं मोम पिघलै। अंधारै में डूब्योड़ै घरां आगे माचा विछ जावै। लोक नसड्यां झुकायां वीड्यां फूंक वो करै। मांयनै लुगायां कोईनै 'सलटांवती' हुवै। पेट भरण'र रो अेक धन्धो ओ भी है—आं लोगां कनै।

पूरे वास में सन्नाटो टूट जावै। धड़धड़ांवती मालगाड़ी री कर्कश अवाज सुण'र लोग चमक जावै।

एक आदमी घर सूं निकल्यो । चार-पांच कुत्ता भों भों करण लाग्या । माचां माथे बेठ्या लोगां ने लाग्यो कै वै सेंग रेलपटड्यां माथै सूता है । घड़धड़ांवती मालगाड्यां बां नै कीचर'र निकल जावै । टींगर रोवै पण कोई कोनी सुणै ।

फत्तू फागली रै घरें जांवतो हो । रस्ते में मोडियो मिलग्यो । इत्तै में सफीयो आंवतो दीख्यो । बै दोनूं जणां बच'र निकलण री सोची । पण सफीये हैलो पाड्यो । बै ठैरग्या ।

–कठै जवा है ? सफीये पूछ्यो ।

–बस इन्नै-उन्नै घूमां हां....। फत्तू बोल्यो ।

–भूठ बोलै स्साला ? सची बता, कठै जावै है ?

–फागली कनै । मंगतू बोल्यो ।

तड़ाक् !

सफीयै फत्तू रै थप्पड़ मार्यो । बोल्यो–वीं राण्ड कनै गयो तो मर जावैला ! गरमी री बीमारी है बीं नै । बा रोग फैलावै । कदेई मोको मिल्यो तो स्साली रै चक्कू मार देवूंला ।

फतिये गौर सूं देख्यो । सफिये में इत्तो परिवर्तन ? बीं नै लाग्यो के सफीयो कमजोर हुयग्यो है । सफीयो गयो परो । बो धीरै धीरै चालतो हो । फत्तू सोच्यो कै अवै ओ तो गयो काम सूं । वीं री आख्यां आगै बो सीन आयग्यो जद सफीयो फागली नै बाथां में भाल्यां बीरा बुक्का लैवतो हो ।

–हुंह बदमास सालो ! फत्तू बोल्यो–खुद तो रण्डीबाजी करतो-करतो बीमार हुयग्यो अर बेटो दूसरा नै उपदेस देवै ।

फत्तू बीड़ी रो टोटो फैंक'र नुंवीं बीड़ी सिलगायी ।

वो बोल्यो–तूं चालैला ?

–नहीं ! मंगतू बोल्यो

तो जा मर ! हुं तो जावूंलां ।

फत्तू फागली रै घर कानी जावण लाग्यो ।

हां ऽ, श्रोईज हो भागली रो मोहल्लो । घरां सूं निकलती नाल्यां....नाल्या रै पांणी सूं व्योड़ो कादो .. कादे में बिल-बिलांवता कीड़ा....घरां रै पाखाना री वास.... भीत्यां रै कनै कूड़ो-करकट.... मैले रा ढ़िगला.... कादै मूण्डो भर्योड़ा ... सूग्रर ।

फत्तू जावतो हो । रस्तै में चम्पली मिलगी । चम्पली नै पूछ्यो–चम्पाऽऽ ... फागली घरै है कांई ?

–हां ऽऽ....।

–तूं कठै जावै है ?

–दवाई लावण नै । फागली री तबीयत खराब है । कै'र चम्पली टुरगी ।

फत्तू फागली रै घरै पूग्यो ।

–कुण है रे....? बूढे पूछ्यो ।

–मैं हूं....फतियो ....।

–ग्ररे फतीया, तू कींयां ग्रायो ?

–सुन्यो के फागली बीमार है....वीं रो हाल पूछण ने ग्रायो हूं । ग्रबै वीं री तबीयत कीयां है ?

–हाल तो बोत खराब है ।

–कांई हुयो वींरें ? फागली कानी इसारो कर'र पूछ्यो ।

..........। डोकरो चुप ।

फत्तू वठै वैठग्यो । थोड़ीक ताल में सगलो भेद वीं री समझ मांय ग्रायग्यो । फागली रै तेज रक्तस्राव हुव रैयो हो । वीं रा कपड़ा खूंन सूं खराब हुंवता हा ।

वा बोली—बापू ऽऽ तूं मांय जा....हूं कपड़ा ठीक करसूं ।

फत्तू ऊभो हुयग्यो । बोल्यो–ग्रच्छया, ग्रबै हूं जाजूं ?

–ग्रांवतो-जावतो रैया कर रै फतिया ..! डोकरै कैयो ।

घर सूं वारै निकलती टैम वींनै डोकरै रै खाँसी करण री आवाज सुणीजी–खों....खों....अक्खों....!

ओपफो ! खांसी ! मृत्यु सूचक खांसी ! मूण्डे सूं निकलता कफ। कफ में खून ! खून में काला धव्वा।

फत्तू घर सूं वारै आयग्यो पण वींरै कानां में खांसी री आवाज हालतांई गूंजती ही—खों....खों....अक्खो....!

वीं नै लाग्यो कै ओ पूरो मोहल्लो खांसे है। ई मोहल्ले रैं मूण्डे सूं कफ पड़े है। कफ में खून है। खून में काला धव्वा है।

फत्तू नै भी खांसी आंवण लागी—अक्खों अक्खों .. अक्खों....!

———

सिणगारी

नृसिंह राजपुरोहित

सिणगारी आज मूड़ में ही। सड़क रै सैं बीच ऊभी होय नैं पोतारो मंत्र जोर-जोर सूं बोलण लागी—लाकड़..........थूंबड़.......... तड़ाक................ तूंबड़..........ताक बिना बिन..........फेमिन वर्क..........मस्टरूल.............. हा ! हा ! हा !

मंत्र बोल्यां पछै जोर जोर सूं हसणैरी उणरी आदत ही। वा इतरी जोर सूं हंसती के मारग वैवता मिनखां रा पग मतै ई ठम जावता। छोरा उणरै च्यारूं मेर घेरो घाल देवता। वा हंसती जावती अर छोरा तालियां बजाय बजाय नैं कैवता जावता—ए सिणगारी लाकड़ थूंबड़ ! ए सिण गारी तड़ाक तूंबड़ ! अर वा हंसती हंसती दोवड़ी वल जावती। लटिया बिखर जावता, फाटोड़ा पूर आगा पड़ जावता, आंख्यां सूं पाणीं झरण लागतो अर वा बेहाल व्है जावती।

आज ई जसवंत सराय रै आगै ओ सागैई नाटक चालतो हो के सांम्हाली दुकान वालो सेठ डंडो लेयनैं आयो।

क्यूं बापड़ी गेली नैं तंग करो रै हराम खोरां ! छोरा एकर तो डंडो देखनैं भागग्या, पण अलगा जाय नैं फेरूं हाका करण लाग्या—ऐ सिणगारी लाकड़ थूंबड़ ! ए सिणगारी तड़ाक तूंबड़ !

डंडा रै डर सूं वा ई पोतारी घर वखरी सांवट नैं बिजली रा थांमा कनैं चुपचाप बैठगी। जीवण रा जूना चित्रांम आंख्यां आगै फिरण लाग्या—लाकड़ थूंबड़ ?..........हां, हां..........लाकड़ थूंबड़ तो एक गांम री नाम है.... .... जठै उणरो घर है, खेत है, गाडरां बकरियां री लांठो एवड़ है..............ईणरो

डोकरी बाप केवै —सिणगारी म्हारीं एकाएक भागवंती बेटी, बेटा पांतई वत्ती । इणरी मा बैठी व्हैती तो इणनैं देखनैं कितरी राजी व्हैती । जीवतां थकां इणरा हाथ पीला कराय दूं तो मरयां ई मुकोतर जाऊं ।

… ……देखजे बेटा एकली एवड़ लेय नैं कांकड़ में जावै तो है, पण ध्यान राखजै जीव जिनावर रौ, ग्याभणी बकरियां रौ !

दुकान वालौ सेठ पाछौ धंधा में लागग्यो तौ छोरा फेरूं भेला होवण लाग्या । एक जणौ जलेबी रौ टुकड़ौ उणरैं कटोरा में नाखनैं कह्यौ—ए सिणगारी वो हाजरी वालो गीत तो सुणा ! वे सगला एक साथै इज बोलण लागग्या ।

कटोरा में जलेबी रौ टुकड़ौ उठाय नैं उणौं मूंडा में घाल लियौ ।

सिणगारी आज भूखी है । ए गुलवा ! दौड़ नैं थारी दुकान सूं खावण नै तो कीं लावै नीं डोफा !

अर भूरा कंदोई रौ छोरौ गुलाबौ दौड़नै बापरै छांनैं खासी भली बासी पुड़ियां अर कीं मिठाई उठाय लायौ । वा नीची धूंण घाल्या डूजा-डूज खावण लागी । छोरा ऊभा ऊभा देखता रह्या । खायां पछै वा किसना बा रै ढाबा माथै पाणी पीवण नैं गई । किसना बा रौ ढाबौ सिणगारी री कायम रौ डेरौ हो । उणरा गूदड़ अर कटोरो ढाबै रै लारै पड़्या रैवै । दिन री बगत वा लटिया बिखेरियां अर पूर ऊंचायां अठी–उठी फिरती रैवै । ओ कई बरसां रौ नेम हो । ढाबा सूं उणनैं रोटी मिल जावती अर इण रै एवज में वा ढाबै रा एंठवाड़ा ठीकर मांज देवती । जसवंत सराय रै आगला दूजा ढावां वाला ई मौको पड़्या उण सूं एंठवाड़ौ मंजाय देवता । वा ई मूड में व्हैती तो मांज देवती नीं तो तड़ाक तूंबड़ करनै अंगूठौ बताय देवती ।

किसनै बा उणनैं पाणी पावतां कह्यौ—दिनूंगै ई कठै रोवती फिरै है रांड ? रोटी गिटणी व्है तो ठीकर लेयनैं मरै क्यूं नीं ? पछै बासण मांजणा है । वा पाणी उछालती बोली—लाकड़ तूंबड…… तड़ाक तूंबड़ …………लै लै लै लै ।

किसनौ बा गरज्या—नकटी रांड लिपलिया करै । एंठवाड़ौ पाणी उछालै । क्यूं मौत आई है ?

छोरा नै मजो आयग्यौ । वे हान मजमौ जमायां ऊभा हा । वा आय नैं बैठी

तो व ई घेरो बणाय नैं बैठग्या । कँवरा लाग्या—ले सिणगारी, अबै तो सुणाय दे वो हाजरी वालो गीत ।

वा हिचकी रै नीचै हथाली राखनैं गावण लागी—

बाबूजी म्हारी हाजरी मंडाय दो कागद में

टीपूड़ी मंडगी नैं बापूड़ी ई मंडगी

सिणगारी गवोला में रैयगी ओ बाबूजी

म्हारी हाजरी मंडाय दो कागज में…………………

हाजरी वालो गीत उणै फेमिन कैंप में सीख्यो हो । उणनैं याद आवण लाग्यो……… …एक………दो…… ……तीन…… ………लगता तीन दुकाल! मेह री छांट ई नीं । बकरियां–लरड़ियां सगली मरगी । एवड सफा व्हैग्यो…………घर में खावण नैं दांणो ई नीं………मरतां बगत डोकरा बाप री आंख्यां डब डब ही । ……… बा गांम वाला सारै फेमिन कैंप में पूगी……………सुपरवाइजर बाघसिंह री गेंग नंबर पैंतीस………… नामो मंडयो……… सिणगारी बेटा मूलारी……… साकिन लाकड़ थूंबड़ ………… परणी के क्वांरी ? उमर याद क्वांरी रे क्वांरी………अकन क्वांरी उमर ? कोनीं । सुपरवाईजर हंस्यो………… बीस बरस लिख दूं ?……… फाटोड़ा गाभां में वा सरम सूं दोवड़ी व्हैगी । सरीखी सांइणी

लारै लागगी—

…… …… ……… ठाली भूली री सरीर तो देखौ जाणै सांचै ढलयो !

………………रूप जाणै आभै री अप्सरा !

………………चालै तो जाणै जमीं धरकै !

…… ……… …धीमै ए सिणगारी धीमै ! कठै ई बाघसिंह री निजर नीं लाग जाए ।

पां……… पां करती एक मोटर उणरै आगै होय नैं निकलगी । बाई पूर खांवे नांखनैं रवानैं व्हैगी । ढाबा वालै किसनै वा लारा सूं हाको कियो—

कठीनै मरै है ए नकटी रांड ? आय नैं झट बासण मांजले, नीं तो आज टुकड़ा नीं मिलैला ।

उणाँ कीं गिनरत नीं करी अर नीची धूण घाल्याँ सरदारपुरा काँनी रवानै व्हैगी । सांम्ही बैंठयौ किताबां री दुकान वालौ मड़कल पंडत हँसण लाग्यौ ।

एक दिन फेमिन कैंप में बाघसिंह उणनैं इणीज भांत धमकी देवतां कह्यौ हो—देख सिणगारी मान जा, पछै पछतावैला ! याद राखजै मस्टरोल में सूं नाम कटग्यौ तो भूखां मरती मर जावैली ।

वा पग रा अंगूठा सूं जमीं कुचरण लागी ही ।

—थारी सगली साथणियां टीपूड़ी, धापूड़ी अर चौथकी वारी वारी सूं म्हारो कैवणो मानगी है तो थूं इसी कांई आभैरी अप्सरा है, जो इतरी करडांण राखै ।

बाघसिंह उणरी पुणची पकड़ लियौ अर उणैं खांचनै कनपड़ा में जरकाई ही एक थाप.........झप्पीड़.............करतौड़ी । छैल भंवर रै आंख्यां आड़ी अंधारी आयगी व्हैला ।

दूजोड़ै दिन इज मस्टरोल में सूं उणरो नाम कटग्यौ हो । उण दिन वा एक खेजडी रै बाथ घालनैं धाप नैं रोई ही..................बापू ! बापू ! म्हानैं एकली छोड़नै कठी गया रे बापू ! ....थांरी लडकी धीवड़ रनां वनां में एकली कलपै रे बापू ! ....

चालतां चालतां उणरी आंख्यां में पाणी आयग्यौ । महात्मा गांधी अस्पताल रै आगै एक डोकरी नीची धूण घाल्यां बैठी हो । वा उणरै नेड़ी जायनैं बोली बापू-बापू ! डोकरै चूंधी आंख्यां मिचमिचाय नैं माथौ ऊंचौ कियौ । वा दो पाँवड़ा लारै सिरकगी । बापू रै तो मोटी मोटी आंख्यां ही प्याला जिसी । ओ तो कोई दूजो इज है..................बापू तो कदैई मरग्या !

वा जालौरी गेट आलै पेट्रोल पंप रै आगै ऊभी व्हैगी । अठा तांई उणरी रमणी ही । इण सूं आगै वा पांवडो ई नीं धरती । नित रोज अठै आयनैं ऊभी व्है जाती अर पेट्रोल पंप वालो उणनैं धुरकार नै काढ देवतो । आज वो कीं काम में लाग्योड़ो हो सो वा घणीताल उठै ऊभी रही । उणरी निजरां आगैं सूं मोटरां, तांगा, स्कूटर साईकिलां अर पैदल मिनख आवता जावता रह्या अर वा आंख्यां फाड्यां देख-ती रही ।

उणनैं चोपासणी रोड कांनी सूं एक लुगाई आवती निगै आई। ऊजला गाभां में फूटरी फररी अर गोरी निछोर। छाती सूं चेप नैं एक नैंनौ टावर तेड्यां। टावर कवलौ कवलो गोल मटोल रबड़ रा बबला व्है जिसौ फूटरौ। वा लुगाई ज्यूं'र नैड़ी आवण लागी वा इण नैं खरी मीट सूं देखण लागी। लुगाई स्यात डरण लागगी ही। वा माथौ नीचौ कियां उण रै आगै कर फुरती सूं निकल जावणौ चावती। पण वा ठीक उण रै सांम्हां पूगी के सिणगारी एकदम झड़पनैं टावर उणरै हाथ सूं खोस लियौ। लुगाई जोर जोर सूं कूकण लागी अर उणैं तो उठा सूं तेतीसा मनाथा। लोग-बाग भेला व्हिया अर बात समझ में आई जितरै जितरै तो वा ठेट अस्पताल सांम्ही पूगगी। दो एक मोट्यार उणरै लारै दौड़्या। आगै सिणगारी अर लारै मोटयार। छेवट आ रेस जसवंत सराय रै सांम्ही जाय नैं पूरी व्ही। टावर री मा रोवती कलपती सांग फांण व्हियौड़ी उठा तांई पूगी जितरै नीठ लोगड़ां सिणगारी रै पंजां सूं टावर नैं छुड़ायौ। उणै उण नैं काठौ छाती रे चेप राख्यौ हो अर घणी दोरी छोड्यौ।

.........मारी स्साली नैं ....रा हाका सागै च्यारूं मेर सूं भीड़ उणरै माथै पड़ण लागी। डोकरा किसना वा नैं दया आयगी। उणा बीच में पड़नैं नीठ उणनैं छुड़ाई। भीड़ नैं हाथ जोड़तां कह्यौ—छोड़ दो रे बापड़ी नैं गैली है! अभ्यागत है। आ कदेई कदेई बातां करै जिण सूं जाण पड़े के आ कोई इज्जतदार भला घर री बेटी ही पण पच्चीसा दुकाल में भूखां मरती गेली व्हैगी।

——

नुवीं राह

मीठालाल खत्री

"बहू, पांणी ...." मांचा माथै सुतोड़ी सास पूरो कैय ई नीं सकी के खांसी सरू हुई। खूणा में बैठी केसी झट उठी अर सास रै कमजोर मोरां माथै हाथ फेरवा लागी। केसी रीढ़ री हाड़कियां सांव गिण सकै। सास दौड़ दौड़ थाकै रिह है। पण वा बी कांई कर सकै? सास सफाखाना री दवा लेवा सूं सांव मना कर दियो है। अर फेर सास नै पांणी री लोटी दी।

"घणी गरम है!" पांणी पियो बाद कह्यो।

"पंखी सूं हवा करूं?" अर केसी भींत माथै टांगयोड़ी पंखी ले नै हवा करवा लागी।

सास बहू रै लांबा अर उजला चेहरा री तरफ देख्यो, उण री खूबसूरती माथै उदासीनता तैर री ही। केसी रा सूखा काला बाल बेतरतीबी सूं कानां माथै बिखरियोड़ा हा। पण उणी कांई मालूम हो कै बिधाता उण रै धणी री उमर कम राखी ही। अगर उणी ठा वैतो तो वा बी सावित्री री तरह यमराज रो पीछो करती अर वर मांगती। सास री आंखां अेक घड़ी डबडबा आई। केसी पोता री ओढ़नी सूं सास रा मोती सरीखा आंसू पोंछती थकी कह्यो—"सासूजी, थैं अतीत नैं भूल क्यूं नीं जावना?"

"कीकर भूलूं, बहू?" सास री धीमी आवाज।

"तो फेर रै-रै नै मंन नै दुखावा सूं फायदो कांई? इणनी अच्छो तो ओ है कै आपां बितोड़ा वगत नै यूं मिटा दी कै आपां रो उण बितोड़ी यादां सूं कोई बी रिस्तो ई नीं हो।" केसी उसांणी बैठ गयी।

थोड़ी जैज पछै आभा में बादल गरजवा लागा। आज सुबह सूं आभो बादला सूं सरीज गयो हो। यूं लागै रिहो है कै सूरज दिखायी बी नीं देवेला।

"छाटां आवै री है कांई ?" अेकाअेक सास पूछ्यो।

"ऊं हूं....."। आगे फेर कैवती, पण सास रो जीव घबरातो देख उण रै मौरां माथै हाथ फेरवा लागी। उलटी वेई, पण वुई नीं। अर फेर बोलीं—

"अेकाध रोटी लावूं ?"

"मत लाव, भावै नीं।"

"आधी तो लावूं ईज परी ......" वा उठवा लागी।

"ना..... टकडो ई नीं भावै।"

अर फेर दोय जणां चुप रिहा। दोयां री नजरां अेक-बीजा माथै टिकीयोडी ही। पण होंठ खुलै नीं रिहा हा, सिरफ हिलता रिहा, शायद बोलवा सारू सब्दां री कमी मैंसूस वै री ही।

अेकाअेक आभा में बिजली खमी। केसी बारै री छत रा रोसनदान ढाकिया। ठा नीं बरसाद करी वै जावै। आज सुबह सूं जल भरियोडा काला बादल गरजै रिहा है। खांणो बनावियो रै पचै केसी सास नै गुड अर काली मिरचां री चाय बना वै नै दी। वै अैडा इ चाय पिवै।

अर फेर वा अकेली कमरा रै अेक खूणा में आवै नै बैठ गयी। वा अठै हैठी बैठ न पीता रै भाग्य माथै आंसू वहावै। अर फेर उणी ध्यान आयो कै अेक दिन अणाईज कमरा में वा पीता रै धणी रै आवा री वाट जोवै री ही। पण आज वा किणारी वाट जोवै ? धणी रो सुख उणै थोड़ो ई मिल्यो। विवाह रै वै बरस तक ई। फेर टाईफाईड नै उणी घेर लियो हो। वै उण नै खूब पियार करता हा। बीमारी रै पैला जद वै अच्छा हा, कह्यो हो—

"थूं खूब अच्छी लागै।"

"सच ......"

"म्हैं चावूं कै थूं म्हारै साथ ई रैवै।"

"म्हैं बी आईज प्रार्थना करूं कै आपां रो ओ बंधण नीं टूटै।"

"भगवांन आपां दोयां री उमर घणी करै।"

अर उगा रा दोय हाथ केसी रै खवां माथै हा। उणा री आंखां केसी री आंखां में झांकै री ही; उण री आंखां में पियार उफणै रियौ हौ। अेकाअेक केसी उण रै मजबूत कसाव में जकडीज ग्यी ही।

जद वै मांदा हा तो कैवता—"म्हैं जल्दी ठीक वे जावूंला।"

केसी री गलौ भरी जावती। वा कुछ बी कै नीं पाती। बस जौ कुछ वै कैवता, वा लकड़ी री तरह चुपचाप सुंणती रैवती अर मंन—ई—मंन भगवांन सूं बिनती करती कै पौता रै धणी नै जल्दी सूं ठीक करै।

"केसी!"

"क्यूं, कांई है?"

"म्है ठीक वै जावूंला?"

"हां……थे जल्दी ठीक वै जावोला।"

पण अेक रात वा धणी नै पांणी देवा सारू उठी। उण री आंखा धणी माथै अटकी अर वा थर्—थर् कांपवा लागी। वै स्वास लेवा में दिक्कत मैंसूस कर रिह्या हा। आंखां री पुतलियां स्थिर ही। सास बी जागी। सारा—अह्र रै देखता देखता अेक आत्मा नारवांन देह सूं निकल ग्यी। दोयां री आंखां सूं आसूं गंगा रै नीर ज्यूं बैहवा लागा।

समाज रै उसूलां मुताबिक केसी घर में कैद री जिन्दगी गुजारवा लागी। हाथां में पैरियोड़ी कांच री राती चुडियां फोडी। बालां में सिन्दूर भर नीं सकती। अर नातरौ करणौ कोसां दूर हौ। उणै लागौ, अेकाअेक तूफांन उणरी जिन्दगी में आयौ, अेक बार में ई सारी ई तबाह कर दियौ।

बेटा री मौत सूं सास रै दिल माथै गेहरी ठेस लागी। रो—रो नै आसुआं री झड़ी लगावती। अर वै मींना पछै सास बी मांची पकड़ियौ, जौ आज तक चालै रियौ है।

……"अर सास पांणी मांगियौ। सास नै पांणी रौ लोटो दियौ अर फेर मांचा रै पामनै ई हेठी बैठ ग्यी। अजै छांटा आवै री ही। रोज अणईज टैम छांटा आवै।

"बहू, चादर ओढ़ावै……"

अर केसी सास नैं चादर ओढ़ावी। पछै वा चाय बनावा सारू रसोई में आगी। गुड़ री चाय बनावै नैं सास नैं दी।

वारै छांटा री हद घणीज बढ़गी ही। केसी नैं लागै रिही ही, ऐ हदां खतम क्यों नीं वै जावती, अेक ई बार में, अेक ई बिस्फोट में। ऐ नीर भरियोड़ा काला बादल अेक ई बार में क्यूं नीं बरस जावता? उणै सोच्यौ, अेक दाई ऐ सारी हदां खतम वै जावेला, इणां री अस्तित्व ई नीं रेवेला। पण हदां खत्म वैवा री बजाय बढ़ती ई जावै री ही। अर केसी मंन-ई-मंन घुटती रैवती, सिसकती रैवती, क्यूं कै वा जाणती कै इण हदां अर पुरांनी यादां में घुटन, खामोंसी अर भटकाव रै सिवा राख्यौ ई कांई? समझ में नीं आवती कै आखिर ऐ सारी यादां मिनख सूं इतरी अटूट सम्बन्ध क्यूं राखै। अगर राखै वो तो रै-रै नैं मन दुखांणों कठा तक ठीक है? सब अेक ई बार सतावै नैं सान्त क्यूं नीं वै जावती ऐ यादां?

"कितरा बजिईया वेई?" अेकाअेक सास पूछ्यौ।

"क्यूं, कोई कांम है?"

"हां……"

"कांई?"

"रसोई नीं बनावंणी कांई?"

"बैपार री रोटियां बी पड़ी हैं, म्हारे सारू घणी हैं। अर फेर थैं तौ खावोला नीं……"

"तौ कांई वुयौ? थारै सारू तौ बनाव।"

"ऊँ हूँ……"

"थनैं कांई वै गयी है? ……इतरी गुमसुम क्यूं रेवै?

"कठै रेवूं इतरी गुमसुम।" आवाज रूआंसी ही।

"कांई करा, बहू?" अेक लम्बी उसांस।

सास री अैड़ी वातां सूं उणरी आंखां आर्द्र वै जावती। वा नीं चावती कै कांई बितोड़ी यादां नैं कुरेदै। वा सब कुछ भूल जाणी चावती। उणैं अतीत सूं अेक कदम पिरणा वे ग्यौ हो। पण अतीत उण रै वरतमांन जीवण माथै हावी वेणी

चावै । वणी री यादां में उणै डुवियौड़ी देखणी चावै । आखिर ओ सब कठा तक चाली?—जद तक जीवण है ।

"कांई सोचै री है ?" सास री सवाल हो ।

"कोई नीं……" अर वा उदास मुंडौ लटकावै नै बीजा कमरा में आग्यी ।

बीजै दाड़ै तड़कै ई सास री तबियत पैला सूं ज्यादा नरम ही । अेक घड़ी केर्मी सास नै देखती री अर फेर तेज कदमां सूं डाक्टर नै बुलावा ग्यी ।

राजा करण री वेला दरवाजो खटखटावा री आवाज सुणता इ डाक्टर दरवाजो खोल्यौ अर पूछ्यौ—"कीकर आइ ?"

"सीरिअस केस है, डाक्टर सा'ब ! टैम मत करजो ।" केसी री आवाज में घबराहट रै साथै–साथै अजनबीपंन वी हौ ।

डाक्टर जल्दी सूं हाथ–मुंडौ धोवै नै केसी रै साथै घरै आयौ । देख्यौ कै सास री छाती जल्दी-जल्दी सिकुड़ै अर फूलै री है । डाक्टर केसी नै धीरज दियौ अर कह्यौ—"फिकर री बात नीं है । जल्दी ई ठीक वै जावेला ।"

अर डाक्टर नै केसी रै हाथां में गोलियां दी तौ वौ केसी रै किताबी उजला चेहरा नै देख मुग्ध वै ग्यौ । वौ उण विधवा रौ हाथ पकड़ेला, आ बात डाक्टर पौता रै मंन में सोच ली ही ।

"अबै जाऊं……आज इतवार है, कोई खास बात वै तौ खबर दीजो ।"

"आप री फीस ?"

"दे देणा बाद में ।" फेर कुछ ठहर कर कह्यौ—"अर फुरसत मिलै तो म्हारै घरै आवै नै दवा ले जाजो ।"

अर डाक्टर देहरी सूं नीचै उतरियौ, केसी उणै ताकती री । धीमै–धीमै डाक्टर री आकरति उणरी आंख्यां सूं ओझल वैती ग्यी ।

वैपार बाद वा डाक्टर रै घरै आई । सास नै कैय नै कै वा डाक्टर रै घरै दवा लेवा जावै री है । देहरी माथै पग धरता ई कुरसी माथै बैठोड़ा डाक्टर सा'ब पूछै देख्यौ—"आ ग्यी……"

"म्हूं दवा लेवा आई हूं ।"

"बैठो तो सही·······"पाखती पड़ियोड़ी कुरसी री ओर इसारी करता थका डाक्टर कह्यौ ।

वा धीमै सूं कुरसी माथै जम ग्यी ।

"ओक बात पूछूं ?"

"पूछो········"

"मैरिड ही ?"

"थानै इणती काँई मतलब ?" उणै डाक्टर सूं ओड़ा सवाल री आसा नीं ही । वा नीं चावती कै उण रै अतीत नै कोई बार-बार कुरेदै । उण री आखां में आंसू आ ग्या ।

"ओह ! थांनै ठेस लगी !" ओ सवाल उणती क्यूं पूछयो ? कांई डाक्टर नींजांणती ही कै वा विधवा है ? अर फेर सोच नै बोल्यौ,—"इण उमर में भगवान् नै थांरै साथै अच्छौ नीं कियौ···········"

"भगवान् नै ओइज मंजूर हौ, डाक्टर साब ।" वा भीनौड़ी आंखां नै काली ओढ़नी सूं पोंछवा लागी ।

"नातरी क्यूं नीं कर लेवती ?" डाक्टर केसी री आर्द्र आंखां में देख्यौ, उण री आंखां में जीवन तैर रिही ही ।

"डाक्टर सा' ब, म्हैं ओडी नीं कर सकती ।"

"क्यूं ?"

"समाज रै बंधण री वजह सूं···············"

"ओक बात कैवूं ?"

"हां············"

"किणी पुरूष री औरत मर जावै तो कांई वो पुरूष बीजो विवाह नीं करतो ?"

"करै···············"

"फेर औरत क्यूं नीं करै सकती ? पुरूष रै खातर तो ओ समाज ओडो कर गयो अर औरत नै नवो जीवण देवारो नियम नीं बना सकतो··············आज री जवांन पीढी इण रिवाज नै तोडै नीं सकै ?" उणै लागै रिही ही कै आज सारी

दुनिया बदल ग्यी है, पण समाज रा रिवाज नीं बदलिया। अर विधवा विवाह री रांगां तौ खूब ई कमजोर हैं।

"म्हारै तोडवा अर नीं तोडवा सूं कांई फरक पडेला ?"

"करै नै देखौ तौ सही। म्हैं कैवे रिहो हूं कै ओ समाज कोई वी नीं विगाड़ सकतौ।"

"पण ·· ············"

"पण कांई ?"

"सासू जी इणै मांनी ?" पौता गी तरफ सूं केसी ढीली वै ग्यी।

डाक्टर नै उण री आंख्यां में भांकियौ, उण री आंखां में दबी वासना री झलक ही। उणरा दोय हाथ केसी रै खवां माथै हा। अेक घड़ी रै वास्तै केसी रौ सिर डाक्टर रै वायां खवां माथै आ ग्यौ। अर धीमै-धीमै दोय जणां अेक-वीजा री मजबूत वाहां रै कसाव में आवता ग्या।

अर फेर वा दवा लै नै घरै आई। सास ऊंघै री ही।

सास रै उठवा पछै केसी उणै दवा दी। अर फेर वा बीजा कमरा में आय नै बैठ ग्यी। बैठा-बैठा उण रै अंतस् में डाक्टर री आकृति उभरी। पण मंन-ई मंन डर वी पैदा वै रिह्यो हो कै सास कांई कैवेला। सास वात मांनी कै नीं मांनी ?

बीजै दाड़ै सांझ रा डाक्टर आयो। सास री हालत में सुधार हो। अर फेर डाक्टर नै केसी री बात की तौ अेक घड़ी सास री जबांन माथै तालौ लाग ग्यो। अर फेर वणी टैम वाद मना कर दियो।

"जाणती हौ, औरत विवांह क्यूं करै ?·······मां बनवा सारू अर पुरुष रै प्रेम सारू······ " डाक्टर धीमै सूं कह्यौ।

"म्हैं सव जाणूं, समझूं पण समाज रै दस्तूरां नै ठुकरा वी नीं सकती ···· ·······"

"क्यूं ?"

"क्यूं कै म्हे नी चावती कै समाज म्हनं कसूरवार ठहरावै।"

"वात समझौ। अगर पुरुष री बजाय औरत पैला चल बसै तौ पुरुष कांई

करै ?........अजै बापड़ी री राख ठाडी वी नीं वुई कै पुरुष बीजो विवाह रचावै। म्हैं पूछूं कै समाज नै इरा क्यूं नीं रोक्यो ?" डाक्टर स्पष्ट कह्यो।

"पण कांई कियो जावै ?"

"केसीं री नातरो करै नै समाज रै गलत उसूलां री रांगां हिलाव दो।"

सास चुप ही। शायई वा सब्दां री कमी मैं' सूस करै रिहा हा या फेर पोता री स्वीकृति देवा रै पैला सोचै रिहा हा।

अेक घड़ी सान्ति छायै री। तीनां जीव अेक-बीजा री तरफ वारी-वारी सूं देखै रिहा हा। पण बोलै नीं रिहा हा।

फेर अेकाअेक सास नै सूखा-पपड़ायोड़ा होंठां माथै जीभ फेरी; होंठां माथै चिपचिपाहट पैदा वै मिट गयी। अर फेर सास नै स्वीकृति दी।

केसी नै डाक्टर री आंखां में झांकियो, उरा री आंखां में नवी राह नजर आवै री ही। वा नवी राह, जिरा माथै वा डाक्टर रै साथै नवो जीवरा बनावेला।

———

मोसर बंद

देवकिसन राजपुरोहित

ठाकर हरिसिंवजी पूरी उमर पाय, बेटा-बेट्यां नैं परणाय पताय'र आपरै लारै च्यार कंवरड़ा हां जिणांरा बंटवाड़ा कराय'र राठौड़ी बजांता बजांता देव लोक सिधारगा। ठाकर री जोड़ रो आंण-बांण आलो मिनख चोखला में हेर्‌योड़ोई कोनी मिलतो। ठाकर पूरो न्याव करता। ठाकर री नांख्योड़ो ईज लूंग नंखतो। ठाकरां रो कह्योड़ो टालण री हिमत करणी हंसी तमासौ नीं हो। ठाकरां रै हाथां सूं बडेरां रै लारै मगला लेण देण कर्योड़ा हा। मीरा चरी री न्याव तो ठाकर पीरईज माजीसा लारै करी ही।

ठाकरां रे देवलोक ह्वे तांई बीजोड़ा रो बख लागो! कंवरड़ा छोटा हा। मोटोड़ा कंवर भीमजी'र हेमजी समझणा हा। छोटकिया कंवर गीगैजी'र भींवजी स्कूलड़ी लारलै सालईज छोडी ही। ठाकर लारलै साल कैवता हा-कंवरड़ा नैं म्हारा हाथां सूं परणायल्यूं तो पछै कीं मनमें कोनी रैवे। आद भवानी ठाकरांरी मन्छ्या आखातीजां नें पूरी करदी। दोन्यूं कंवरड़ा बींद बिण्या। ढोल रै ढमाके जानां चढ़ी। गाजाबाजा रे समचै फेरा ह्वे गया। ठाकरां नै नेहचो ह्वियो। छोगला नें ठाकर कह्यो छोगला! अबे भलाई सांवरियो आजइज बुलायले तो राजी खुसी बैटां रे खांदै जावां परा। छेवट रामजी ठाकरां नें बुलाय लिया।

च्यारूं कंवरड़ा पोल में बैठ्या'र विचार्‌यो'क आपजी रे लारै कयै करणो। छोटकिया कंवरड़ा रै नूंवां जमाना रो वायरो लागोड़ो हो। हेमजी बोल्या-भाई। जमानो चोखो कोनी। मोसर तो नीं करणो जोईजे। लारला दिनां रामपुरा में सांवतजी मोसर मांड्‌यो हो, पिण राजआला उणनें रोकाय नांख्यो। खासी गुनैगारी करी। मोसर राजथांनी सूं बंद कर्योड़ा है। भींवजी बोल्या—'पिण आपजी लारै धरमादो काढणो जोइजे, ईं'ग खातर गांवरी स्कूलड़ी चोखी बिणाय'र आपजी रा

नांव री भाटो लगा देस्यां तो चोखो रहसी । धरमादा रो काम है । मोटोड़ा भोमजी बोल्या—थैं दोन्यूं हालतांई टाबर हो, थांनैं कांई ठा । न्यातड़ी तो करनीइज पड़सी । न्यात गंगा सूं उंचो कुंण ? न्यात भैला तो भागियां रै थरपीजै । कागद-कलम-दुवातियो ल्यावो पंचाँ नें हेलो पाड़ो'र चिठयां फाड़ो । हुकम देंवतां पांण भींवजी उठ्या'र भौमजी रा हुकमरी तामील करी । चिठ्यां फाटी । पांच्यो भांभी गांवां में ठाकरां री न्यातरी चिठयां पुगावा निसरयो । तरै तरै री चीजां वसतां मोलीजण लागगी । विसनजी रिप्या ले'र निकलया हा घी ल्यावण नैं । ठाकरां नैं ठाडै पांणीं गंगाजी घालण नें गिया हा माराज तिलोकदासजी'र मलूकदासजी । ठौड़-ठौड़ ठाकरां री न्यातरी वातां चालती ही । "ठाकरड़ो ठीक आदमीड़ो हो । कंवरड़ा लारै चोखा निड़्वया जिको मौसरड़ो व्हैंज्यासी, नींतर आजकाल रा थोड़ाइज छोरा सपूत व्है है। घणांरा तो माथा भूंण व्है ज्यूं रवै है।" पेमजी-भेमजी नें कह्यो'र अमलड़ा रो हंडियो सांमो कर'र अमल रीमनवारड़ी करी । नेमजी चिणा जितरी-जितरी अमलड़ा री दोय किरच्यां उठाई'र दे रंग गले उतारी, पछै करयो खैंखारो अर वोल्या-किसोक राज आयो है ? अमल वंद कर दियौ, मौसर वंद कर दिया । ईं राज रो आं में क्यै लागती हो (पेमजी होको गुड़गुड़ावता बोल्या—अरे थें तो अमल'र ओसर-मोसर वंद करणरी वात कैवो हो, ओ राज तो कैवे है क टावर ई बंद कर दैला । दोन्यू डोकरा हंस्या । नेमजी नें तमाखू रो खारो गुटको आयो'र खलु खलु धांसण लागगा । पेमजी आजकाल रा पलट्योड़ा जमाना रो अचूंबो करैहा ।

नेमजी बूझ्यो-न्यात कद है ? चिठी पढ़णियो टाबर वोल्यो-बावोसा । चिठी में लिख्यो है, न्यातरो कीरतन इग्यारस सोमारो, न्यात'र गंगाजली बारस मंगलवारी अर विखेर तेरस बुधवारी है ।

कीरतन रो चीणी रो सीरो'र पछै पांचू मिठायां ही । चरका फरका रो पूरो इन्तजाम करयोड़ो हो, न्यातियां रै ठैरण खातर डैरा दिराय दिया । मांचा गुदड़ा भैला करण रो काम छोगला नैं भुलाय दीयो हो । छौगलो वैला माथै आपरो काम पूरो करयो । न्यात रा मिनख भैला व्हैण लागा'र गांव में मैलो व्है ज्यूं व्हैगो ।

ईं गांव रो मास्टर'र हिरजी ठाकरांरा कंवरां नैं समजायाहा क थैं मौसर मत मांडो । ईं में कीं कोणी मिले ! गांव री स्कूलड़ी नैं दिराय'र अमर नांव करद्यो । कंवर नीं मानीं जद हीरजी आंख पलटी'र वोल्या-कंवरां थैं मोसर करयो तो म्हैं थांणे लियावुंनो । हीरजी थाणा रो डर वताय'र आपरै गैलै लागा ।

गांव रा सरपंच'र पंच टो कांसा करता हा अर पटवारीजी अमल-तमाखू-चाय रो इन्तजाम करण में लागोड़ा हा। कीरतन री पंगत बैठीं'र दो च्यार सिपाईड़ां नैं लै'र थाणदार आयगा। पाटवी कंवर भीमजी थाणादारां सूं जैमाताजी री करी'र कांईठा कीं फूक दी क सिपाई तो पुरसगारी करण लागगा'र थाणादार पोल में जा डेरो दीयो। हीरजी जाणगाक कंवर सूं थाणादार मूंक लेली। हीरजी रात्यूं रात ऊंट चढयो'र तहसीलदारां नैं जाय जगाया। तहसीलदार जीपड़ी मंगाई'र आयगा ठांणै। ठांणै आया जितरी जेज लागी पिण सीसी में उतरतां जेज नीं लागी। तहसील-दार पोल में बैठा सिगरेटड़ी रो कस ताणै हा। हीरजी फट जाणगो। हीरजी गल्यायोड़ा दो अवसर रदी निसरग्या। हीरजी पाछो दौड़यो'र एस. डी. ग्रो. सा'व ने कह्यो। सा'व इसो मोको क्यूं चूकता। फट जीपड़ी चढया। आयगा ठांणै। बुलाय भीमजी ने'इ कहचो :—भीमजी ! मौसर बंद है। थांनै ठा कोनी क्यैं ? भीमजी बोल्या—सा'व थोड़ो-घणो ध्यानड़ो तो हो। जद एस. डी. ओ. सा'व बोल्या—तो थैं थारो गुनो मानण नैं त्यार हो। भीमजी कह्यो :—सा'व एक नीं च्यार बार गुनो मानण नें त्यार हूँ। म्हूँ एकइ नीं तीन न्यांता करी है। पैली म्हारा आपजी री, बीजी थाणादारजी री, तीजी तहसीलदारजी री न्यात करी हैं। अबैं चोखो मोको मिल्योक आप पधारगा। म्हारो गुनो माफ करावो सा। एस. डी. ओ. सा'व बूझ्यो—ए थैं किया करी ? भीमजी कह्यो—ग्रां नैं रिपड़ा दे'र काडया हा। आप पांचसौ रोकड़ा लेज्यावो। सा'ब जाण्यो-किणींरो कर्‌योड़ो कामडो है। सुधरे नीं तो बिगाड़णो चोखो कोनी। फेर लिछमी रे लात मारणीई चोखी कोनी। रिपड़ा खूंजा में घाल्या'र लिख्यो—"ठाकरां रे लारैं बिरमभोज करचो हो, मौसर नीं हो। ईण में भीमजी'र उणांरा भाई राजरो कायदो नी तोड्‌यो।"

सा'व गिया परा। न्यात बिखरगी। भीमजी नै ठुकराई री पाग बंधाई। बीजै धाड़ै मास्टर भीमजी नै कह्यो :—ठाकरां ! थांरा गांव आली स्कूल जीजोगी पड़ी है, थैं इण मौसर आला रिप्या लगावता तो स्कूल ताजी बिणज्याती। भीमजी बोल्या—मास्सा'व ! थां सांची फरमावो हो पिण इसी च्यार न्यातां कोनी ह्वेती। थैं तो कैवता हा' मौसर बंद है। ओ देखो चोड़े-धाड़ै म्हैं कर लियो। मास्टर 'मौसर बंद है' सोचतो सोचतो स्कूल गियो परो।

राजस्थानी कविताएँ

शारदा वन्दन

महावीरप्रसाद शर्मा

माणक मोती तट पर आवैं मा, हिवड़ै सागर झाल दे ।
झल मल झलकैं बढै उजालो, ज्ञान दीवलो बालदे ।।
म्होर ढलै ना छबको खांवैं, छंदा की टकशाल दे ।
सोन चिड़ी सी कविता सोवै, सरवरियाँ री पाल दे ।।
देख्यां तांई भर्‌यो खजानों, भाव पोटली खोल दे ।
शबद शबद पर हिवड़ा रीझैं, सुघड़ सलूण बोल दे ।।
झुक झुक मुजरो करू घणू, मा आंगण ड्योढी खोल दे,
वाणी फूटै स्वर गूंजै मा, गीतां को रमझोल दे ।।
गोतै गोतै लाल मिलैं मा, इसड़ो जश को ताल दे ।
जिण घड़ियां मे कविता ठिठकै, उण घड़ियां न टाल दे ।।

अरदास

(१)

थकगा नैण उडिकतां, बादल आज्या रै ।
कि बैरी आज्या रै ।।
बिकगा झूमर टेवटा बाजूबन्द री लूम ।
उजड़्या डांगर टापरा बाण्यां कै भेली टूम ।।
काल पड़ैलो जोरको भैंम जगन नं खाय ।
बिन बरस्या बादला ईमान भागतो जाय ।।

गरज हठीला जोर सूं अम्बर में छाज्या रै ।
कि वैरी आज्या रै ॥

(२)

फीको पड़गो नावड़ो धूल चढ़ी गिगनार ।
तड़फै जीव उजाड़ रा जोड़ां सूखी गार ॥
रोवै पिरजा बापड़ी आंख्यां आंसू जाय ।
बिन बरस्यां बादला के बालू माटी खाय ॥
मरु कै पाखी मोरियां नै पाणी प्याज्या रै ।
कि बादल आज्या रै ॥

(३)

टीबां सूक्या फोगला बणी निसाई रेत ।
धरती तो हो गई दुहागण राहय बांझड़ा खेत ॥
मोरां रा प्यारा बादला राख चातक रो हेत ।
चोर लापसी करै कड़ाई चेत बादला चेत ॥
या धरती रो नाम करण री सोगंद खाज्या रै ।
कि वैरी आज्या रै ॥

★

सांझ

आयां मानों घूंघट काढ़ै जाय नावड़ो दूर जी ।
सांझड़ली री मांग में सूरज भरै सिंदूर जी ॥
झालर बाजै देवरै रूंखां पाखी आवैजी ।
धूल चढ़ै गिगनार में पाखी रामूयां गावै जी ॥
सिर पर थाल मणोदिया गीतां री रमझोल जी ।
आवै घूमर घालती नणद भूआयां री टोल जी ॥

हुकै री धूंश्रां उड़ावता आया करस्या और मजूर जी
सांभड़ ली री मांग मं सूरज भरै सिंदूर जी (१)

हरे रूंख पर सूअटा कागा सूखी डाल जी।
खुर सूं मांडै माडणा गायांरा लंगार जी ॥
थम थम काडै तापड़ा टोरड़िया अलोल जी।
टींगर खेलैं गोखै बूढा बैठ्या पोलजी ॥

वरण नं फिरै रिझावतो लाम्बी पांखों रो मयूर जी
सांझड़ली री मांग मं सूरज भरै सिंदूर जी (२)

चरखो मेल्यो ओवरै तुलसां जोयो दीयोजी।
गीत सांझ रा गावतां हरख मनावै हीयो जी ॥
वहू का नैण उतावला रै रै बाअर झांकै जी।
चमकै मुखड़ो, चांद सो, वलद घूघरा वाजैं जी ॥

लाज सतावै सास की पण मन वैरी मजवूर जी।
सांझड़ली री मांग मं सूरज भरै सिंदूरजी ॥ (३)

★

भोर

सांवर दइया

भोर री वेला
रसियो सूरज
चोरी-चुपकै सूं आ' र
कर न्हाख्यो आभो लाल !

जाणै कोई वहनोई
होली खेलण रै मिस
साली रै गालां माथै
मसल दी हुवै गुलाल !

सावण री बादल्यां

सावण सुरंगो
आभै में खिड़्योड़ी
घटाटोप बादल्यां काली !

जाणै गोरड़ी कोई
मसल न्हाखी हुवै
आंख्यां काजल आली !

झांसो

पाणी री छांट को न्हाखी नीं
कई दिनां सूं चमकै है बीज
अर गाजै हैं बादल कालो !
आ तो हुई आ ही बात
कै कोई घरै बुलावै आपरै
पण जावां जद लाधै तालो .

थै जाणो हो

थै म्हांनै जक को लेवण दो नीं
थै जाणो हो—
जै म्है अराम सूं रैवण लागग्या तो
थांरी नीन्द हराम हुय जावै ला !

कोयलो इत्तो कालो को हुवै नीं

थै घड़ी-घड़ी म्हारो अपमाण ना करो
अपमाण सैवण री भी अेक हद हुया करै—
थै आ ना भूलो ।
थां रै ई थप्पड़ रो जवाब
अवै हूं भी थप्पड़ सूं दैवूंला ।
[डावै गाल माथै थप्पड खा' र
जीवणो गाल थांरै आगै मेल' र
हूं गाँधी को नीं बणणो चावूं !]
थां रो टेरी कोटन रो सूट
बाटा रा चमचमांवता जूता
रंगील टाई अर चस्मो
ई जुग री फैसन हुवैला
पण खादी रो चोलो अर पजामो
घसीज्योड़ै तलां आली चप्पल
हूं भी पैर्‌या करूं हूं ।
[हूं नागो कोनीं !]

चेम्बर में धांगी कुरसी माथै पसर्यां पूछै
घण्टड़ी बजांवतां ही
चपड़ासी हाजर हुवै ।
पण सुणो—
हूं भी च्यार टांग्यां आली कुरसी माथै बैठ्यो हूं ।

थे हीरा नहीं
पेन्डट नहीं
पण हूं भी 'कार्बन-कुल' रो हूं ।

म्हूं कोयलो हूं
अर याद राखो—
कोई भी कोयलो इतो कालो को हुवै नीं
कै बळ'र भी लाल नीं हुवै !

दो छोटी कवितावां

भगवतीलाल व्यास

आग

बळबळता आग रा गोला
मूठ्यां में दाब्या
आपां वणी दन
चौराया सूं
बीछड़्या हा
म्हूं नीं जाणूं के
थां वणी आग सूं कई कीदो
म्हारे ताईं आग रो
मतलब है
बळबो, बळबो अर बळबो ।

आतमा सूं

ए सुणैगा
ट नैड़ा
एक प्यालो ले जहर रो
साथ पी ल्यां ।
कई कैवे ?
आतमा है थूं
र रो प्यालो
अमर कांनी करै ?

वर्णी ग्राछी वात
थोड़ी वैठ तौ जा
'ग्रातमा' म्हारी
ग्राज थां सू वात करणी है
पूछणो है पतो ग्रमरत रो
म्हनै भी तो वो
ग्रसर कोनी करै !

*

म्हारौ गाँव

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

कठैई कीं तो को बदलियौ नीं
म्हारौ गाँव
बठै रो बठै इ
वेड़ो रो वेड़ो है।
वै री वै
वगारा हुयोड़ो घाघरो पैरियाँ
गलियाँ
चौंतरा रा अन्तरेवा लिया
एक सूं दूजे घर रा डोढ़ा लेपा जोड़' र
सावतरी दरोगण ज्यूं ऊभी है
जिणने कदे ई
वगत मांडई मांडई दारू पावतो
अर वा दाँत भींचती
वा इज आज
लीर भाण हुयोडो घाघरो पैरियां
पिणघट माथै वेवड़ी—वेवड़ो हुयां ऊभी है।
कारण,
जे इकेवड़ी ऊभी रै,
तो कढ़ती डोल रे झोटा में
कीं देखणो बाकी नीं रेवै।

मिनख केवै
के जुग पलटियो है
आँधा है म्हारे जुग रा मिनख
सुणी वात साँची मानै
म्हाने तो इतरो इ ठा है
के कांई ठा कांई
आंधा ने सकरकन्द कै' य' र
भिलाय दियो है।
वीस बरसां पैली
ठाकर छठी ढुगली लाटता हा
अबै आध लाटै
जद मरियल घोड़ी चढ़ता
अवे कारां चढ़ै
जद काची ईटां रे धुड़ियोड़ै रावलै में
मूंज रे मरियल माथा माथे
लौ रे पोले री लकड़ी लियां सूवता
अवे तिखंडे मै' ल में
पलंग माथै वन्दूक लियां पोढ़ै
जद राम सूं इ डरता अर दरबार सूं इ
पण अबै
डर—भौ नांव
वां रै सवद कोस सूं बारे फैंक दीनो है।
चिलम भर ' र कोई इ ठाकर वण सके
अर एम. एल. ए. री धणी इ चिलमां
आपरो खीरो

आपो औलख

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा "विद्यार्थी"

मोटो बोर
गोल मटोल
गोरो निचोर
मीठो गटू' क
लाल चुट्ट
मुंडो काढ़ै
पत्तां ओलै
इन्नै झांकै; बुन्नै दिखै
टाबर बोलै—
"बा ! देख : बा बूढाक" ।
टाबर-टींगर भेला हुग्या
भाटां का सहीड़ उपड़चा
बूढ़ा-बडेरा सागै बोल्या—
"एक बावड़ै खातर भाया
कत्ती' क खोपर्‌यां भच्चीड़ उपड़्‌या ।"
गेलै बगतां कैई कियो—
"आछा फूट्‌या थांका भोगना" ।
कैई ! टींगर घणां कूटीज्या
कैई' भाज्या
कैई ! लुकग्या
कैई ! कियो "म्है हा कोनी !"

सुकरात जै' र पियो
ईंया ही मरी—
दुनियां की सांच
मरतां मरतां
वडेरचारो राख्यो।
जीतां वै रोया
जगती हनी
मरयां जगनी रोयी
वै हंस्या
जुग हंस्या।
लोग वांनै
पैली मार्या
पछै पूज्या
ग्रा ! क्यांकी जगती
ग्रा ! कै जुगती
कीं ! कोनी समभ पड़ी ?
लोगां की कैवत में—
"ग्रो ! वडेरचारो है।"

टूंपो

कुण करै
ग्रर—
करा सकै
ग्रोतो—

हाथ थाम्रो
बैठो! पीग्रा
नहाने पाग्रा।
कृपा, देवै!
कृपा, हे देवै!
जको ग्रा केवै
गुणा! जुग देवता
वो! ही नागरा नेता!

*

समाज

भूख की भीड़
भोग को भांटो
मेला हुग्रा—एक जगा
ग्रो' कै नागो?

चन्द्र संदेस

नृसिह राजपुरोहित

थूं संकर रै सीस पर
रूड़ौ करतौ राज
किम मिनखां रा पगलिया
थां पर पड़ग्या आज ? ॥१॥

चन्द्रमुखी विलखी फिरै
विलखा फिरै चकोर
कमोदणी कुम्हलायगी
चलै न किण रौ ई जोर ॥२॥

पोल अपोलो खोल दी
चादा थारी आज
तो ई चमचम चमकतां
आवै थनैं नीं लाज ॥३॥

म्है धरती रा मानवी
थूं सुरगां रौ देव
अमरा पुर में पूगणौ
म्हारी जूनी टेव ॥४॥

जुग जुग सूं नह जांणियौ
थारो अवखो ढंग
छेवट भेद उघाड़ियौ
रंग मांनखा रंग ॥५॥

नह थें अहल्या नैं ठगी

निष्ठा नै नी बेचूं

भँवरसिंह सहवाल

गीतां नै
विकवाणो चाहो
विकवा द्यो,
पण भावां नै नी बेचूं ।
काया नै
विकवाणो चाहो
विकवा द्यो,
पण प्राणां नै नी वेचूं ।
श्रा हिवड़ो तो द्रढ़ श्रासा नै अर्पत है;
श्रा जीवण तो विस्वासां नै अर्पत है;
मूरत नै
विकवाणो चाहो
विकवा द्यो,
पण निष्ठा नै नी वेचूं ।।

☆

जीवण जोत जळै है

कुण कै
परळै रो समदर

राज रो नोकर

एक तारीख री
उडीक में
अलसायोड़ो फूल ज्यूं —मानखो

इमानदारी

पोथ्यां में दव्योड़ी
अणकाजु भासा ।

*

ऊं—करती चाली गोरड़ी
सासरिया री गेल,
पावणा लेवण आया जी । २

मायड़ काकी भाभी आई,
आई बेनड़ भुआजी ।
पास पड़ोसण सबही आई,
आई मामी मौसीजी ।
बाबल काको वीं रो मलग्यो,
नुवी ओढ़ाई ओरणी ।
गले मिलतां हियो भरग्यो,
घूंघट भीज्यो गोरड़ी ।

ऊं···ऊं···करती चाली गोरड़ी,
सासरिया री गेल,
पावणा लेवण आया जी ।१।

☆

मनसूबा उजड़ गिया

गाँवां री चोपाल'र
शहर रा चौराया पर
भेला हो'र लोग बतलावै
माथा मोल दे'र
देशरी आजादी लेवा, अर
उगरी रक्षा करवा हालां रा
मनसुबा ही उजड़ग्या।
क्यूँक इन्सान तो आज भी
धर्म री दीवारां,
मजहबां रा कठघरा,
अर भांत भाँतरी जातां रा सीखचाँ में
कैद होयर
नफरत रा दायरा में
घुटी घुटी साँसा लेर बेबसरी
जिण्दगी जी रियो है।
आपरणाँ ही हाथाँ सूँ
जहर पी रियो है।
परण कुरण रोके उँन ?
टोक कुँरान ?
अब तो असी दीखै कि
सारा देश हाला ही
याँ पिंजरा में कैद होवान ही
या, आजादी लीनी है।

मनसूबा उजड़ गिया

गाँवां री चोपाल'र
शहर रा चौराया पर
भेला हो'र लोग बतलावै
माथा मोल दे'र
देशरी आजादी लेवा, अर
उगरी रक्षा करवा हालां रा
मनसूबा ही उजड़ग्या ।
क्यूँक इंसान तो आज भी
धर्म री दीवारां,
मजहबां रा कठघरा,
अर भांत भाँतरी जातां रा सीखचाँ में
कैद होयर
नफरत रा वायरा में
घुटी घुटी साँसा लेर बेबसरी
जिण्दगी जी रियो है ।
आपरणाँ ही हाथाँ सूँ
जहर पी रियो है ।
पण कुण रोके उँन ?
टोक कुँणन ?
अब तो असी दीखै कि
सारा देश हाला ही
याँ पिंजरा में कैद होवान ही
या, आजादी लीनी है ।

पन्ना री बातां भी ईं धरती री थाती छे ।
भामाशा तो बाणयो छो,
धरतीरा बचावण ही,
उन्हें खजानो भरद्यो छो,
हाल तो काल्ह ही, होश्यार ने,
शत्रु रा माथा काट काट,
माता रो भाल सजायो छो ।
तो थें भी,
म्हारो सुहाग बणबा चावो तो,
सांगा, परताप और चूण्डावत बन,
धरती रो करज चुकाजो,
माता रो दूध पुजाजो ।
मूं भी सती पद्मनी,
ओ हाडी रानी बन,
शत्रु पर कूद पडूंगी
दुश्मन कूं मार भगाऊंगी
तू म्हारो चूण्डो,
मूं थारी हाड़ी,
आपण दोणू जणां,
ईं धरती रा फूल बणां
हंसता गाता मिट जांवा,
ईं धरती धूल बणा ।

☆

म्हा नगरी में
मिनखां रो पलाव

ईं पलाव में
मैं भी वैतो जावूं
दूजां सूं आगै निसरवां तांई
दूजां रा ढुलेड़ा खूंवा पर चढ़'र
छाजा पकडवा तांई

ओपरा उणियारा भेवा में
म्हारो ओपरो पणों
म्हारै सू झूझै
आतो सै जाणै
कतरो ओखो है
अपणै आप सूं जुद्ध करवो ।

निरणावासी छीयां
धोवीरा सूकता गाभां पर
पेट पलाण्यां रिगसै

मैं देखूं हूँ—
आखी नगरी नै
खामोसी री रिजाई रा
छिण छिणां खोला में वड़तां
काला गूमडा सो कीं
मांय मांय जल बलावै
बार निसरवां तांई ।

भीतां रै अेवड़ छेवड़
पड्दा ई पड्दा

चार मुक्तक

वायरिया गत जेजड़ली नै कदे न कोई नावड़ै ।
ई मनड़ा री वालदली नै एक ठोड नी आवड़ै ।
आ धरती री रीत'क आयो उगानै पछरी जावणो।
जाय जको इण जग में पूठो कदे न कोई बावड़ै ।

रूसी जेज मनावूं मैं क्यूं आज करूं जुग री मनवार ।
मधुरा गावूं गीत मनावूं औ जुग रा मंगल तीवार ।
प्रीतडली रो सूक्यो सरवर आसा रा भुजण्या चितराम
मोत मालिये आज करूं क्यूं जीवन रा गोलू सिणगार

इण सपना री सोन चिड्यां रै कदे न उगिया पांखड़ा ।
आता आता ई आ पूग्या जावण रा दिन सांकड़ा ।
पीड़ा कदे न परणी मुलकण आई ही मुकलावली ।
मांड दिया क्यूं म्हारै मांथै विधना इसड़ा आंकड़ा ।

छिण मं बरसै मेह'क चालै कदे क वलनी पूनड़ी ;
सुरमू सारै साध'क पाकै पल मं पीड़ा गूमड़ी ।
जिणरो ठलको पोत दाझ्या पल्ला जुगरी भाय रा
आखो जीवन भांत भतीला डबकूल्यां री चूनड़ी ।

*

पगडांडी

पगडांडी
जो चालतां चालतां सड़क
और सड़क सूं राजमार्ग बणगी है
आ बात भूलगी है कि
वीं नै यो सम्मान दिवा वाला
वीं नै धूल सूं सूरज बणावा आला
वीं कै दायां बायां खड़ा हजारां विरछ
आपणू अस्तित्व मिटा दियो है
आपणी जड़ा खुदवा दी हैं
वीं नै यो रूप देवा नै।
घणा करा क छोटा लाम्बां रास्ता
आपणू 'स्व' विलीन कर दियो है
वीं नै 'चौड़ा' वा में।
वीं नै याद है
केवल आपरो वर्तमान
आपरो नूवों पद
आपरो बड़प्पण
और खुद रो अतीत भूलकर
जो काली नागण ज्यां
वल खाती अभिमाण सूं
पसरगी है।

*

राजस्थानी व्यंग तथा रेखाचित्र

दरपण री करामात

ओम अरोड़ा

लोगां रै विचार में दुनियां री सह स्यूं भ्यानक चीज एटम बम है। इचरज री बात है लोग दरपण नै कांई ठा कियां भूल्या बैठ्या हैं। एटम बम स्यूं तो आज तांई कुल मिला सू दो ई शहर निष्ट हुया हैं, दरपण स्यूं हुयेडै विनास रो चांको भी लागीजणों मुस्कल है। एकलो महाभारत नैं भीं ल्यां तो कितरो भंकर जुद्ध हो? पांच हजार बरसां पहलां माच्योडै भीं जुद्ध री भंकरता स्यूं डर्‌योड़ा केई कवि तो अजे तांणी वीरै उपर वीर रस री कवितावां लिखें हैं। फिल्मां बणावण हालां अजे तांणी फिल्मां बणावें हैं कथा वांचणियां री पीढयां री पीढ्यां भी री कथा बांच-बांच र खपत हुगी पण महाभारत री भंकरता रो चितराम अजे तांणी पूरो नहीं हुयो।

जाणों हो महाभारत रै लारै बबाल कांई हो? दरपण। न द्रोपती रै महलां में दरपण जड़ीजता, न दुर्योधन ठोकर खावतो न द्रोपती वीं नै आंधै री औलाद कैंवती अर न महाभारत रचीजतो। पण जठै दरपण हुवै बठै भलार कठै? पदमणीं रो किस्सो भीज ल्यो। दरपण नीं हुंवतो तो राणों अलाउद्दीन नै साफ नीं कय देवंतो—"छि म्यां चाऊंला मिस्टर अलाउद्दीन! गिरोज पदमणीं आप स्यूं नहीं मिल सकैली।" किस्सो भठै ही खतम हु-जावंतो। पण भीं दरपण पर फोट पड़ी अर रणवासां में उल्लू बोलया लागा।

कांई ठा? भीं दपण नै बणांवण हालो कुण रयो हुवैलो? पण इतरो निस्चै है, भो काम नीं भीं मिनख रो तो कठात भीं नहीं है। का तो

ओ कीं औं लुगाई रो करतब है का फेर आ करामात की औं शैतान री है। है। 'इव' अर 'आदम' वाली कहाणी पर विचार करां तो लागै जरूर कठै ओ सूनो नागो जी है? कहाणी में सेब री जिग्यां दरपण हुंवतो तो कहाणी किनरी -'रशनल' बण ज्यांती? 'इव' सुन्दरी ही। आदमी बी—'हेन्डसम' रयो हुवै लो? भगवान व्यां नै 'इडन' रै बाग में भेज्या कै जद तांणीं व्यां नै आप री सुन्दरता रो ज्ञान नहीं हुवैलो ऐ सुख स्यूं रवैला। पण शैतान-व्यां नै तबाह करणा हा। जिका कर्‌या। शैतान 'इव' नै वीं जिग्यां रो ठिकाणो बता दियो जठै दरपण बिकै हा! 'इव' नै दरपण हाटो मिलन आयो, कंवणीं चाइजै दरपण में आपरो लोवणों मूंडो मिलन आयो। वीं निरखी मेल' र कयो हुसी ?-हाऊ ब्युटी फुल ?" औं रै उपरान्त वीं आदम नै वो दरपण दिखाई हुसी? निनार ओ 'क जलस्यूं ले' र अब ताईं मिनख कमस्यूं कम दिन में पांच दस वीरियां दरपण रै साम्यां जरूर जावै। 'इवां' रो पछै कैवणों औं कांई? बापड्यां आपरै पर्स में औं दरपण घाल्यां फिरै। लुगाई नै 'इस्ता-टल' करण में जितरो हाथ दरपण रो रयो है बितरो सिणगार रै कवियां नै छोड'र दुजै कीं औं रो नहीं रयो।

लुगाई जणां दरपण रै साम्यां बैठ ज्यावै तो घण्टां मिन्टां री मानखो ओ कांई है? वीं नै सदियां तांई तो ज्ञान नहीं रया करै। अजन्ता री गुफा में एक लुगाई ल्यारली केई सदियां स्यू दरपण रै साम्यां बैठी आप रो 'मैकअप' सुवांरै है। झूठी मूठी बिड़दावण करण में तो दरपण रा मुकाबला ओ कांई? जे कोई लुगाई दरपण रै साम्यां बैठ' र वीं नै पूछै—"क्यूं टियर दरपण? हूं थानैं किसी क लागूं हूं?" दरपण चट राफां तिड़का देसी- वाह! कोई बात है थारैं सूणांपै री, औं मामलै में तो कालीदास री शकुन्तला बी थारै मुन्डागै पाणी भरै है। लुगाई लट्टू हो' र फेर पूछै लो—हैं रै कांई हूं सच्चाई शकुन्तला सिरसी लागू हूं? दरपण मस्को लगा र कहसी—अजी, कीं री शकुन्तला! थारी होड तो वीं री मा मैनका ओ नहीं कर सकै। आ औ बात जे लुगाई कीं भलै आदमीं स्यूं पूछै तो उथलो हुवैलो "देवी जी, भरम कांई है थानै? जे मुन्डै पर स्यूं ओ पोडर सोडर थोड़ो उतारदयो अर औ मुंहगा कपड़ा जे एक खानी राखद्यो तो लालकी भंगण री भैंण लागस्यो। मुंह दिस्सै है नीं छींट रो वटुओ हुवै ज्यूं ." पण दरपण इतरी सांची बात कदास ओ नहीं कवै लो'वीं रै आगे तो जे काली कलूटी भंगण बी उभी हो र बूझै क' हूं किसी' क लागूं हूं? तो बीनै बी वो सुरग री परी ओ बतावै लो। सार ओ क' दरपण लुगायां रो चमचो हुवै है।

दरपण रो अर साहित रो वी जूनों मेल है। जे किणीं राह बगतै कनै स्यूं पूछो कै सिर दर्द री दुवाई बतावो, तो झट कवैली "एस्प्रो।" इयां श्री जे वीनें पूछो'ग कै साहित कांई है ? तो कवैलो साहित समाज रो दरपण है। साहित री श्रा 'पैटेंट' परभापा है जियां कै एस्प्रो सिरदर्द री 'पैटेंट' दुवाई है। श्रीं परभापा नें सुण' र म्हारै दिमाक मे एक श्रोर श्रलवाद उठ्या करै—क' भाई साहित जे समाज रो दर्पण है तो फेर साहितकार कांई हुयो जिको समाज नै-मूड' र श्राप रो उल्लू सीधो करै।

दरपण साहित नै वी मोकली चक्कर घिन्या करवाई है। रीतिकाल री तो सोह रो सोह साहित दर्पण रै श्रेड़ै गेड़ै कूंडिया काट तो लाधै। नायिकांवा श्राप रा सह भेद दरपण रै साम्यां श्री परगट करती ही। कवि लोग साम्या बैठ्या मांडता रैवता। केई कवियां नै श्रो काम ल्हुक छिप' र वी करणो पड़तो। खास वियां कविया नें जिकां री गायणां कीं घणी नखराली ही। घणखरां' क रीतिकाल रै कवियां कर्‌यो वी बोश्री काम है जिको' क दरपण नै करणों चाइजै। म्हारै मनग्यान तो श्रीं काल नै दरपण काल कयो जाणों चाइजै। वियां भगती काल रै कवियां दरपण स्यूं केई काम लियां हैं। सूरदासजी कृष्ण जी नें केई बार दरपण रै साम्या खड्या कर्‌यां हैं। तुलसी दासजी दरपण रै चक्कर में घणा नहीं पड्या क्यों' क सीता जी बनवास आवता दरपण श्राप रै साथै ले ज्यावणों भूलग्या हा। वियां रामचन्दर जी स्यूं दरपण ल्या देवण रो घणी जिद वी नहीं करी, क्यूं' क जंगल थकां नदी नालां रै पाणी मे श्रीं श्रापरो झावलो देख' र काम निसर ज्यां तो।

श्राजकाल रा कवि तो बापड़ा श्राप श्री लुगायां ज्यूं घणखरो' क दिन दरपण रै साम्यां श्रीं बैठ्या रवैं हैं सो दरपण प्रयोग वियां साहित में कीं कम श्री कर्‌यो है। फेर वी बार त्यूहार दरपण रो जिकर श्रायो जरूर है। एक नूवें कवि तो श्राप रै कविया संकलन रो नांव श्रीं 'मायादर्पण' राख मेल्यो है। जे श्रो कवि भाई नें तुक मिलावण री ठरक हुंवती तो श्रीं री तुक 'पितृतरपण' स्यूं सागीड़ी मिल ज्यांवती। हिन्दी साहित रै एक धाकड़ लिखार 'श्रश्क जी' रै उपन्यास रो तो नांव श्रीं है—'शहर में घूमता हुश्रा श्राईना'। श्री नांव नै पढ़' र म्हानै पहली बार ठा पड़्‌यो कै शहर में चोर, उचक्का पाकिटमार श्रर पत्रकार ही नहीं घूमें बल्क श्राईना (दरपण) वी घूमें है।

केई दरपण मजाकिया भी हुश्रा करै। म्हारे कनै एक दरपण है जो

म्हूँ बी सैलूण में गियो !

ओम अरोड़ा

भाषा शास्त्र रै विदवानां नै स्यात ग्रीं बात रो ठा नईं हुसी कै नाई शब्द री उत्पत्ति कीं शब्द स्यूं हुयोड़ी है। म्हारै विचार में नाई शब्द 'उई' रो विगड़्योड़ो रूप है। इतिहासकारां नै ठा हैं कै पत्थर युग रा नाई लोह री जिग्यां पत्थर रै पाछणां स्यूं सुंवार कर्‌या करता। अर सुंवार कराण हालो (जणा वै पत्थरां रै पाछणां स्यूं इयां जीवतै री खाल काढ्या करता) पीड़ स्यूं उई ! उई !! करतो। म्हारै विचार स्यूं आगै चाल'र इयांल कै उई, उई, करावण हालां रो नांव ईं'ज नाई पडियो। वियां केई विदवानां री विचार ओ बी है कै नाई शब्द जरूर कसाई रो बीगड़्योड़ो रूप है, मतलब कै नाई रा पुरखा कसाई हा। पछैं जावतां जिकै लोगां जिनावरां री जिग्या माणसां नै वाढ़णा सरू कर दिन्या वै नाइयां रै नांव स्यूं मानीजता हुया।

थे स्यात हिरान हुर्‌या हुवो, कै चाणचक ओ शब्द शास्त्रीय इतिहासिक ज्ञान म्हानै मिलियो कठै स्यूं ? बात दरसल में आ हुई कै म्हारी मुलाकात एक दिन वीं नाई स्यूं हुगी जिको 'मोहनजोदड़ो' री खुदाई में जींवतो निकिलियो हो। ओ नाई कोई अच्छी ठाटबाठ सजियोड़ी दुकान में नईं, बल्क सड़क रै किनारै एक तीन फुट ऊंची भींत रै उपर बैठ्यो हो। भींत रै एक पासी एक टूट्योड़ी सी कुर्सी पडी ही अर भींत रै उपर दो ईंट्यां रै सारै एक सीसो टिकायोड़्यो हो, जिको कीं मजनूं रै सीसा-ये-दिल री दांई मोकली तरेड़ां खायोड़ो हो। कमाल री बात आ उपरां स्यूं ओर ही कै म्हानै वठै कोई रा, कातरणी पड़्यो नईं दिस्यो। अबै थे ओ बताओ—

—वाह, साहब ! पुराणें री बात वी आछी चलाई। ओ पाछणों तो म्हारै सूरमैं दादो सा नै राणी झांसी साहब तोफे रै मांय दियो हो। वां दिनां म्हारै खानदान रा लोग सुवांरां रो काम न कर'र लड़ाई रै मैदान में लोगां री गर्दनां साफ कर्‌या करता। एक दिन रानी जगां अंग्रेजा स्यूं लड़ण लागर्‌या हा तो वियांरी तलवार टूटगी। म्हारा दादो सा झांसा सिंह जणा ओ विरतांत देख्यो तो उवां आप री तलवार राणी झांसी नै पकडाय दिन्वी अर आप राणी री टूट्‌योडी तलवार ले'र तीन दिनां ताणी अंग्रेजां स्यूं लड़ता रैया। राणी वांरी बहादरी पर खुश हो'र वा टूट्‌योड़ी—तलवार म्हारै सुरगवासी दादो सा नं इनाम रूप देय दिन्वी। ओ पाछणों म्हारै सुरगवासी दादो सा वीं ओंज तलवार रै साचै लोह रो घडायो है। जिकै स्यूं हूं ओं वगत आप री सुंवार ...!

म्हनै वीं री ओं बात स्यूं गोला आना तो खैर पुराणा हुग्या सो पीसा आकीदो आयग्यो। क्यूं कै म्हैनै इस्यो ओंज लागै हो ज्यूं म्हारै मुंह पर पाछणो नहीं तलवार चालती हुवै।

भाई, आ बात तो ठीक है, पण थे कोई नयो पाछणों क्यूं नही खरीद लेवो ? म्हे पीड़ रै मार्‌या चिरला'र बोल्या।

वाह सा' आ भी कांई बात है ? नया पाछणां तो वै खरीद्‌या करै जिकां रा बाप दादा पाछणां दे' र नहीं जावैं। म्हारा सुरग वासी दादो सा कह कह मर्‌या कै जे म्हारै खानदान में कोई कायर ज्याम ही ज्यावै अर वो लोगां री गर्दनां काटण री बजाय लोगां री सुवांर करणी सरू कर देवै तो ओ पाछणों वां रै काम आसी। वीं पाछणों ने जोर स्यूं खीचतै कयो।

"तो थे ओंनै थोड़ी सिलड़ी पर रगड़ ही ल्यो।" हूं नांग मा...' कयो।

"वाह साहब, वाह ! सिलड़ो री जरूरत ही कांई है!" ... बोल्या।

"तो कमस्यूं कम क्लोरोफारम री शीशी तो राख्या ... स्यूं ज्यान छुडावण रो मनसूवो बांधतै कयो। पण ... ... ताल हुय चुकी ही।' सो भाजण रा नाम्म वी नहीं हा।

मांड्यो अर माथै मार्यो

श्री नन्दन चतुर्वेदी

जनतंत्र मानै छ क हर मनख राजकाज कर सकै छ। राज ने चला छ। चला भी र्यो छ। पैली बात छ क राज सुधारवा की जगां पै बगड़तो ही चल्यो जावै। काईं कोई नेतो ईं कारणसूं चुनाव लड़वा सूं मूंडो मोड़ लैगो क ऊँ क भेई शासन चलावा की तमीज को न? काईं जरूरी छ क बेईमानी रोकवा हाला दफ्तर म सभी ईमानदार बैठ्या होवै; कोई भी वां म बेईमान न होवै? पुलिस हालांन में एक भी असो न कढे जो उचक्कांन सूं मल अर रात्यां-रात घरां, दुकाना का ताला न तुड़वा दै? कस्यां कोई मान लै क नसबन्दी का महकमा म रिजक-चाकरी करवा हालां मं कोई भी बाबू क अफसर कै घणी लांबी छोरा छोर्यांन की जमात न होवै? अर एक दरजन सूं जादा टाबरां को बाप कोई कवि 'परवार नियोजन' को परचारक बन क कवि-सम्मेलन को महनतानो छोड़ दै? जद यो सब चालै छ अर धड़ल्ला सूं चाल र्यो छ तो फेर म्हारी ही कोई अकल मारी गी छै जो म्हारी कलम अर आवाज पै अंकुस धरूं?

चोखी तरां जाणो छो क म्हूं अनाड़ी छूं। फेर भी म्हूं मांडतो र्यो। भायलां न काणो क बुरू छ पर म्हारी कलम चालती गी। सम्पादक लोग म्हारी रचनान ने फेरता र्या, म्हूं दूना जोस सूं मांडतो अर भेजतो र्यो। म्हूं जाणे छो क कब्ज जतनो जाडो होवै उतनो ही जोरदार तो जुलाब भी चावै छ!

अतनी बात छी पर म्हूं मांडै कांईं छो यो चोखी तरां जाणे छो। झूठ बोलवा की टेव म्हारी जनम की छ पण अतनी बात म्हूं पछाणूं छूं क

'छै ताईं आवारा फरवा हाला ऐरा गैरा जो अब एक एक पन्ना का 'पत्तर-
ार' बनग्या छा, वैं ताईं म्हारा ऊपर तरस खावा लाग ग्या छा। वडा
वहाल्यान कै तो टर पर भी पूगवो भारी छो। ऊठी तो पंडान की जमात ही
धक्का अर बारै काढ़ देवैं छी।

ग्रावा को चाव ग्रस्यो माथै चढ्यो क ऊतरै ही कोनी छो। घणो
सोच्यो। अकल का घोड़ा की लगाम जद जोर सूं खींची तो तंडियो अर
हणहणायो। वाग्यो क "अरै मूरख तू अब ताईं न समझ्यो। यां पंडांन सूं
पछाण कर, वां नूं मगपण बढा। फेर यां की ही आंगली पकड़ अर जजमान
की चौखट तणी पूग जा।"

म्हारा भेजा में बात पचगी। म न चमतकार कर नाख्यो। म्हारो दन
को दन पोथ्यां कै बीचै ही कढवा लाग्या। घणा अखवार अर पोथियां लोट
डाली। बांची एक भी न, बात काईं न काईं घणी पोथ्यां न क लेकै मांडी।
एक पोथ्यालो जो 'पुस्तकालय' बाजै छो ऊं मं जतणी भी नुई पोथ्यां देखवा म
आई वां की घणी बढाई मांड अर वांका लिखवा हालां क ही पास पुगा दी;
साथ म मांड द्यो क थांकी घणी करपा होवैगी, म्हारै भेई आपकी पोथी घणी
चोखी लगी सो बात मांड भेजी छ, कोई वडा अखवार म छपवादो, म्हारै भेई
तो यां मं सूं कोई पछाणै कोनी। पछाण होती तो म्हूंई छपवा लेतो।

या तदबीर रामजी का बाण की नाईं काम करगी। घणा लेखकां न
तो झट सूं ही सही फरमा दी। जो पचार बैठ ग्या वां न कारड डाल अर
फेर-फेर कुरेद्यो। फल यो मल्यो क ईं अनाथ कै भेई घणा नाथ मलग्या
म्हारो जमारो वणग्यो।

अब काईं छो! यो एक रजिस्टर को मांडबा हालो साहतकार
बालमीक बाबा की नाईं मट्टी फोड़ अर ऊबो हो ग्यो। जठी देख्यो उठी ही
आपणो नाम चमक र्यो छो। फेर तो दन यूं बदल्या क जो भी डाक आवै
ऊ म ही पोथ्यां को ढेर म्हारै नाम आवै। देस का जाणे कुण-कुण जाण्या,
अणजाण्या लेखकां, कविगां, क्याण्यां माडवा हालां की पोथ्यां म्हारै पास आवा
लागी। म्हारै पास गीतभीत को घर पोथ्यालो, जीं न पढा-लिख्या गोटूयार
'पुसतकयालो' बाजै छै, आप सूं आप बण ग्यो।

म्हूं पछाण ग्यो क म्हारो जमानो आग्यो। म न आपणी पराणी मांची
चीजां सब फेर डाली। वां प जमी होई धून झटकारी। समपादकां का गेर

कुमांणस

विश्वम्भरप्रसाद शर्मा

गाभै सूं मोगरी बोली—

"डोका म्हारी मांचकली चोटां सूं थारो मैला सूं कालो कढ्यो। घोटां सूं चट्टीड जरूर उपड़े पण थ्यानणूं वापरै जनम सुवरै लोगां कै होठां पर गुण गाईजै, मीनखां कै चित्त चढ़'र गुणीजै।"

गाभो बोल्यो—

"गांठ पटक पटक'र हाडका फोड़ गेर्‌या, म्हारै तो दरद सूं अंधेर घुप हुगी है तन्नै रंडाप थ्यानणूं सूझै है। म्हे थारै कन्नऊं कद थ्यानणूं मांग्यो हो। बिगाणी ही बिणाप जचावै है। आगै साट बोलगी तो तूं जाण्यो है।" मोगरी चुप हुगी।

साबण बोली—

"गाभा थारो म्है ही' क जको थारै में उजास चपराग्यो। चिकणास कर्‌यो। थारी जात में तन्नै रळतो कर्‌यो। थारो जमारो सुधार थारी बात राखी। तन्नै म्हारो गुण कदैई नहीं भूलणूं चाइजै।"

गाभो बोल्यो—

"तूं तो म्हारो गुण जबर ही कर्‌यो। कै! कस्यूं? तूं तो कुळखणी बल्योड़ा पर लूंण बुरकायो है। बावली! थारै में ही गुण हुता तो लोग थारी काया नै रगड़ रगड़'र पांणी'क बारै क्यूं बुहाता? तन्नै थारो कोनी सूझै?

मीनम्व बोल्यो—

"भला घरां रा जायोड़ा कीं को तो गुण मानतो । थारे तो सै इकसार । मान स्यूं नै गुण तो म्हारो थे ! घणूं ही कर्यो है न । ईं जमारै में तो नी भूलूं ? आगे की आगे देखी जासी ।"

"दे'र पांड्या आसीस ।" "म्है कै द्यूं, म्हारी आतमा देसी ।"

आसै-पासै वारु सहरां में कवि पोकरै री धूम मचीजती। ब्याव-सावां री टैम में उवांरी मांग घणी वढ़ जावती। न्यूता अगावू जमा हुवीजता। कारण क वरात रै डेरै में एकलो कवि पोकरो ख्याल रचा देवतो। देव कंकाली, अमरसीह राठोड़, स्याहपोस आद धक्कै चढ़ीजै उवींरा'ई बोल डावै हाथ री हथेली डावै गाल पर धरयां अर जीवणो हाथ आभै में उछालता इसड़ै जोर सूं टेर खिचीजता क आखै गांव रा मिनख भेला होय न तमासा देखीजता।

खरच-काज में भी कवि पोकरै री बूझ कम नी हुंती। जा दिनां वारां गांवां री चिट्ठी फाड़ीजती उवां दिनां मोकला मिनख भेला हुवीजता अर ताराजड़ी रात में कवि पोकरै नै एक तखतो रखवा'र पगां-पाण ऊभो कर देवतां। फेर तो आखी रात उवांरी मीठी लामी ढाल अर तीखै कंठा री सुर-लहरी सूं गुंजीजती। उवीं वखत पर ढोली-ढाढी भी आपरी ढोलक रै खुड़का सूं संगत करीजता। इसड़ी रातां लोगां रै हिरदै में चितराम ज्यूं मंडीजती अर भुलाई नी भुलीजती।

कवि पोकरै नै वार तिवार भी उवींरी विरतवाला सेठ-सेठाणी जीमण रो न्यूतो देवणो नी भुलीजता। एक दिन एक सेठाणी उवांनै जीमण रो न्यूतो भेजियो। देसी घी रो सीरो अर साग-पूड़ी। पोकर जी पालथी मार न जीमे अर सेठाणी घणै प्रेम सूं जिमावै। पोकरो पूरी मांगी पण सेठाणी भूल सूं साग परुस दियो। फेर कवि पोकरै रो कांई डटै! झट जोर सूं बोल्या--

'सीरो तेरो खरखरो कंठा आग धरै।
पूरी मांगै पोकरो (तू) झट दे साग धरै?'

सेठाणी सुण'र चितराम री हुगी। फेर पोकर जी सूं हाथ जोड़ न माफी मांगी अर आपरो पिण्ड छुड़ायो।

एक वर पोकरो आपरै भाई वैजनाथ सूं लड़ पड़्यो। जमीन रो कीं झंझट हो। आगर टांग आजी। झूंभणूं वारा वरस मुकदमो चाल्यो। पण गनटारो हुवो कोयनी। जा दिना मोटरा-वसा चालती कोयनी। तारीखां पर पैदल ही जावणो पड़तो।

बिगड़े तीवणां रै सागै हुग्यो ! तैं बहोत रोबी रा रांदया! ठैर ! आज तेरी सतेवड़ी धणी जचा'र करस्यूं । आ मरज्याणां ऊतरी-उतारयां रै साथै बिना तन्नै ढोई कोनी।" इयूं झाल पटक नै गंडक मारण री डंडूकल्यो इसड़ो बायो क कालिये रो बोबरो फूटतो हुतो पण बाल भर रो आंतरो व्हेग्यो। कालियो तो तगरो छोड़ नै दी दड़ी। बाकी छोरां में एक बरस्या ,सरणाटो सो व्हेग्यो। कालिये री मा दकाल मारी,—"निकलो म्हारी पोल सूं। राम रा सुंवारया वरण वरण रा भेला हुग्या। जे ओजूं पग मांडया तो खोज बाल न्हाखूंगी। थारै मायतां रा लोही पीवो। महारै क्यूं गेज पड़ीजगा।" ई दकाल सूं छोरां री चेतना पाछी बावड़ी अर पलक झपता नै तेतीसा देग्या।

थोड़ी ताल में कालिये रो बाप पोल में बड़ियो अर बोल्यो—"इयो कियारो रोलो हुरयो है ! कालियो ओलमो ल्यायो दीसै।" ,'अजी, थारो वो तीमण जणो कुचमादी है। बास रा सगला टीगरां नै भेला करल्यायो। कैवै, कुत्ती रो मेलो है, तेल गुड़ घालो। रामारया नै ओ ठा कोयनी क समो के बगरयो है। काल मूंडो फाड़ मेल्यो है। बाणियो रीपिये रा तीन पाव दाणा पल्लै में नी घालै। दो जूण दो टीकड़ां रो जुगाड़ नी बैठै। मोठ तो घीव सूं मूंगा हुरया। मन मोस नै पड़या हों। इबकलै सिरकार भी फेमन रो काम नी चलावै। मिनखपणो कीकर रैसी ! इआ सोच'र म्हारो भीतर भिल्यो जावै है। टींगरां नै सीरै री सूझै।"

"कालिये री मा ! टाबरा नै काल-सुकाल रो कांई बेरो ! उवांरा तो खेलण-रमण रा दिन है। उवासूं माया-पच्ची ना करिया कर। ध्याबस्त राख। परमातमा सब ठीक करसी। उवांरो खेल निरालो है। उवां चूंच दी नै चुग्गो भी देयसी।" कालिये री मा झरण झरण आंसूं टलकांवती चूलै सानी मुड़नै बोली—"कोरो डांडस आतमा में ढूकै कोयनी। चुगो रुलग्यो धूड़ में·······सीली धूड़ पिराणहीन—इयरी कूख नूनी सूनी····निपजणै नूं टलगी·······बांझ····।"

कालिये रै बापू रै काळजै नै अणचित्यां भावां रै भय रो काठ मारग्यो। उवांरै हिरदै री उगती फब्ल नै निसांसा रो कातरो कुतरतो जावै है मन रै पानां पर हलवां सरकतो सरकतो·······मणधाक····।

मोहिंरे रै बाड़ै में टींगरां रो टोळ घुचरिया नै तड़ावै। आप आप रै गूंजै में बिखेरी सूकी रोटयां रा टुकड़ा लुका'र ल्यावै अर घुचरिया नै

विगड़े तीवणां रै सागै हुग्यो ! तैं बहोत रोवी रा रांदया ! ठैर ! आज तेरी सतेवड़ी घणी जचा'र करस्यूं । आ मरज्याणां ऊतरी-उतारयां रै साथै बिना तन्नै छोड़ूं कोनी ।" इयूं झाल पटक नै गंडक मारण रो डंडूकल्यो इसड़ो वायो क कालिये रो वोवरो फूटतो हुतो पण वाल भर रो आंतरो व्हेग्यो । कालियो तो तगरो छोड़ नै दी दड़ी । बाकी छोरां में एक बरस्या सरणाटो सो व्हेग्यो । कालिये री मा दकाल मारी,—"निकलो म्हारी पोल सूं । राम रा सुंवारया वरण वरण रा भेला हुग्या । जे ओजूं पग मांडया तो खोज वाल न्हाखूंगी । थारै मायतां रा लोही पीवो । महारै क्यूं गेज पड़ीजगा ।" ई दकाल सूं छोरां री चेतना पाछी वावड़ी अर पलक झपता नै तेतीसा देग्या ।

थोड़ी ताल में कालिये रो वाप पोल में बड़ियो अर वोल्यो—"इयो कियारो रोलो हुरयो है ! कालियो ओलमो ल्यायो दीसै ।" ,'अजी, थारो वो तीमण जणो कुचमादी है । बास रा सगला टींगरां नै भेला करल्यायो । कैवै, कुत्ती रो मेलो है, तेल गुड़ घालो । रामारया नै ओ ठा कोयनी क समो के वगरयो है । काल मूंडो फाड़ मेल्यो है । वाणियो रीपिये रा तीन पाव दाणा पल्लै में नी घालै । दो जूण दो टीकड़ां रो जुगाड़ नी वैठै । मोठ तो घीव सूं मूंगा हुरया । मन मोस नै पड़या हों । इवकलै सिरकार भी फेमन रो काम नी चलावै । मिनखपणो कीकर रैसी ! इआ सोच'र म्हारो भीतर भिल्यो जावै है । टींगरां नै सीरै री सूझै ।"

"कालिये री मा ! टाबरा नै काल-सुकाल रो कांई वेरो ! उवांरा तो खेलण-रमण रा दिन है । उवांसूं माथा-पच्ची ना करिया कर । थ्यावस राख । परमातमा सव ठीक करसी । उवांरो खेल निरालो है । उवां चूंच दी नै चुग्गो भी देयसी ।" कालिये री मा झरण झरण आंसूं टलकांवती चूलै खानी मुड़नै वोली—"कोरो डांडस आतमा में ढूकै कोयनी । चुगो रूलग्यो धूड़ में·······सोली धूड़ पिराणहीन—इयरी कूख सूनी सूनी····निपजणै सूं टलगी······· वांझ····।"

कालिये रै वापू रै काळजै नै मणचिंत्यां भावां रै भव रो काठ मारग्यो । उवांरै हिरदै री उगती फसल नै निवांता रो कातरो कुतरतो जावै है मन रै पानां पर हलचां सरकतो नरकतो·······मणवाक···· ।

मोठिया रै गाड़े में डांगरा रो टोल पुचरिया नै लड़ावै । आप आप रै मूंडै में विखुरेड़ी सूखी रोटघा रा टुकड़ा लुका'र ल्यावै अर पुचरिया नै

लियां अंधारों पसरयो पडयो, छोरां नै कांई पडूत्तर देवै। चूकली री मा नै आज तीजो दिन है जापै में पड़यां। अजवाण रा मोया सुपना हुयग्या। एक वखत गुड़ रै बोलिये री विद नी वैठी। कियां वैठै! घर में कुठआ सूना हुया उबासी मारै। मोटयार तो काड़ाका काढ़ लेवै पण जचा रो कांई हवाल! आज तो जावक निरहार–खाली पेट। मिनखपणो रूलग्यो। साबूत हाथ–पगां रै मिनख री करारी हार। कालजै री अणूती डोर तणी आ हीमत बांधी फकत सीरली रै तगरै उठावण री। मजबूरी रै बाघरै रो नाड़ो भरे मिनखां में खुलग्यो अर नागो हुयग्यो। उवांरी पत री बीरखानी सरम सूं हलाडोब हुयगी। इय सूं वेसी कांई मरण हुवै!

हुणतो एक 'र चेतो कियो अर वोल्यो—"टाबरो! मैं नी ल्याओ। थानै वेम हुयो हुलो। वावलियो मैं तगरै रो कांई करतो।" हुणते री जीभ तालवै में खिंचीजै। बोल सावल नी उपडै। सोनली हुणतै रै कांधै नै भच-भेड़ा देवतां बोली—"कीं कर कूड़ो बोलै काका! मेरी आंख्यां आगै तगरो उठायो।" टीगरां ओजूं हेलाल मारया–'सीपली रो तगरो दे काका, सीपली रो तगरो दे।'

भीतरी चुकली री मा ने रोलो सुणीज्यो। उवां स्याणी लुगाई ही। नामी सांस रेयगी। थाली में पूरस्येड़ो सीरै रो डोल, देख'र असल बात जाणगी। भठ छोरी रै हाथ धणी नै बुलवायो। हुणतै री फिरती लास भीतर पूगी। जचा बोली—"मेरो गोलो दुखै है। कीं चोखो नी लागै सो दयो सीरो बारै छोरां नै बांट्यो। हुणतो भणेणो नी हो पण चुकली री मा रै चेहरै रो एक एक आखर बांचग्यो। हुणतो भाटो हुयग्यो। उवरी सूकी आंख्यां में कीं टोपा निचुड़ नै बारै निकल्या। एक भूचाल सो आयो—जीवण रो आसरो थंभूलियो। हुणतो थाली लेयनै बारै पूग्यो अर बोल्यो–"ल्यो, टाबरियो! कुत्ती नै सीरो पुरसो। तगरै में नी, कांसी री थाली में। तगरो फूटग्यो। थाल में जिमावो। जचा गावो।"

हुणतो पागल गो बरड़ातो गियो। आखर पोल री देली खने गुड़ कीजग्यो। टाबर तो परमहंस हुवै। खावै-पीवै अर रलो करै। पण हुणतै री पीड़ नै कुण पीवै? उयो खुद परमहंस वणग्यो—सुख-दुख री चित्यां सूं परै-वैराग-वैराग'''मांत।

लाच्छन राम जी 'डोकरी'

मोहन पुरोहित "त्यागी"

म्हे सुणू हूं के सर्व गुण सम्पन्न भगवोन ईज है पण जठे तक म्हारी र रो सवाल है म्हूं तो आइज फूं ता के केवणियां आ केन अपणी 'अणसमझी सबूत दे रीयां है। हां आ बात खरी है के भगवोन सर्व गुण सम्पन्न है पण किणी मे ईं होई नी सके या तो वे हीज लोग के सके जिणनूं इण तिक युग री महानतम बूंटी [विभूती] लाच्छन राम रो परिचे नी हुयो है। डंके री चोट ने ताली ठोक रे के सकूं हूं म्हारा वेली लाच्छन राम जी री गवान रे बाद दूजो नम्बर है। इणरी मोनता वेलीपे रे कारण नी, भोत तीली खुबियो रे कारण मोनूं हूं जिणने ऐलो पेलो इये जमाने में तो क्या लम मरण रे फन्दे में कई बार पड़र अर हरेक योनि रो हाल मुख जबोनी ख कर वी पाय सके इमें मने तो वेम हीज है।

अठे म्हूं आपरी अगम भखण [भविष्य री जोणकारी] री कर्तबो री णगी आपने पेश करूं हूं।

आप मगज रो अर्क निकालर आपरे खातर एक चोखी सी उपाधी भी ख ली है, इण मुजब आपरो पूरो नोम लाच्छन राम 'डोकरी' हुयो। कोरो डोकरी' केणे सूं आप घणा पोमीजे है, झाडर डक गंडक खयड़ खूं जी

आपरा परम मित्र है। आप ऐड़ा ऐड़ा सिध्योन्त निकाले है जोणे सिध्यान्तों री परिपाटी आप सूं हीज शुरू हुई है। सभा में भाषण देवण रो आपने बणो कोड है पण जद आप बोलणो शुरू करो हो, जणे सुणणियों हँसणो शुरू करे है क्यूंके बोलतां बोलता मूंडो इण तरया बणाओ हो जोणें कोई चिड़ियो चींची करर मां खनू चुगो मांगे है। श्रोता हँसे तो आप ने इंसूं कीं एतराज नीं क्यूं के आप श्रोता ने तो सरोता हीज समझो हो जिणरो कोंम कुट कुट किट किट करणो हीज व्हे है। आपरे विचारों सूं सभा में श्रोताओं रो महत्व मत्र सूं कमती हुया करे है। जे ऐड़ी नोबत आ जाय के हँसण सूं शुरू होयर श्रोता रोवण रींकण अर आपने स्टेजमाथू हटावण खातर सिड़ियोड़ो कोंदा अर टमाटर फेंकण लाग जावे जणे आप छेडलो वाक्य ने हेक सांस में केन लारली खिड़की सूं कूद घरे परा जावे। पूछणे पर बतावे के आ म्हारे ऊँचे व्यक्तित्व ने चोखो भाषण देवण री सेनोणी है।

हेक फेरा हेक सज्जन आपने जीमण खातर नेतरिया। पेल तो आप जावण खातर रजा नीं दी पण हेकाहेक तुलसीदासजी री रामचरित मानस रो आधो दूधो याद करन के 'कोंम करण ने आलसी भोजन में हुशियार' हुंकारो भरल्यो। गैरी सियालेरी रुत में वी आप मुलमुल रो चोलो ने पतली धोती पेरणो पसन्द करे है, गर्मी री रुत में गर्म पेण्ट शेरवानी अर ऐड़ा ई बीजा जाड़ा कपड़ा चल सके है। पूछणे पर बतावे है क इणसू प्रकृति न जींतण खातर बल मिले है। हरेक आ नीं कर सके, इण खातर आपने हेक विशेष मानवी मोने है।

जिण टैम जीमण हाल्या उण दिनों गर्मी री रुत ही। इण खातर आप गर्म कपड़ों में बणींठणा ठणीया कीणी करोड़पति रे काके अर राजकुमार रे वास्तूं कमती को नीं समझता। इणी पोषक में आप भोजनालय में कोंकू रा पगलिया करया। सैंगो सूं पैला आप श्रो पतो लगायो के इणी केई चीज री थोड़ी मोल दीसे है अर केई चीज वधारे वणियोड़ी है। थाने ठा पड़ी के मिठाई पुड़ी साग मेंग मोकला है, थाल में भुजिया को कम दीसे है। पांणी टम सोमी भालियो तो ठा पड़ी के पांणी थोड़ोक है, पगाल हाल भाई नीं है। बस सर्व-गुण सम्पन्न ने उतरी जाणकारी की कमनी है! थाली में की मेवों लेर ढकी अर पटापट चार मोटा पांणा धांट अतियो अर भोजन सूं निरवाला होयर वर्णार होवण लुगा। म्हैं भी उण पार्टी में नतरीयोड़ो हो अर ओठरो भो

आसी, वो वी म्हारे ज्यूं वातों करसी, इणसूं वो भी विमार पड़ जासी अर वांरे वेलियों ने वांसू बिमारी रो तमगो मिलसी। इण तरया ओ नेम चालू रैसी ने पूरो राष्ट्र हेक रोग शैया वण जासी। इण सिद्धान्त रे मुजव आप आपने राष्ट्र रो भारी परवीयों मोने है अर इण तरयां ही अणेक वीजा सिद्धान्तो खातर आपनो युग पुरुष मोंनता हुया विधु अपणीं विशुद्ध राष्ट्रीयता रो ढोल जगां जगा पीटता रै वे है। ऐड़ा इणांरे जीवण रे चोपड़े रें,खूणें खचूणें केई उदाहरण मिल सके हैं जिणसूं ठा पड़ सके के आपरो नम्बर भगवान सूं पेला नहीं तो पछे वो न हो सके, आप वी उणरा सम कक्ष हो। जद कदेई भलेई मने आपरे जीवण माथे कलम वेवावण रो मौको लादो तो आपरी जीवण रा अजीव चुटकला पेश करों ला।

टाबरियां नैं ठाडा भोला दीजै म्हारी माय

नृसिंहराज पुरोहित

पात्र—१. काकी सा
 २. पटेलण जी
 ३. डाक्टर सा'ब

पटेलण—(एक दम तेज सुर में) अर र र र र ! अर र र र र ! अर र र र ऽ ऽ ऽ ! उई रे ! (चालती-चालती पग पकड़ नें बैठ जावै)

काकीसा—कांई व्हैग्यो पटेलण जी ?

पटेलण—अर र र र र ! उई रे ! मरगी ओ काकीसा म्हूं तो ! हे रामजी ।

काकीसा—अर कीं बतावो तो खरी भलां मिनखां । यूं कांई टाबरां री गळाई हाय वोय करो हो !

पटेलण—पग में गीलो चुभग्यो ओ काकीसा ! देखो कोनीं पगरै कन्नै लोही रो नाळो भरीजग्यो है । म्हारै तो जीवरी पड़ी है अर थांनै टाबरां रै ज्यूं हाय वोय नजर आवै ।

काकीसा—अरे राम रे ! थारै पग कांनी तो इतरी तेज म्हैं देखी ई कोनीं, बाई ओ ! हे भगवान लंगा रै कितरो लोही निकळग्यो ?

पटेलण—आज दिनूं गे उठतांई किण दुस्टरो मूंडो देख्यो ओ काकीसा, सो राजा करण री वेला पग में खीलो बैठग्यो।

काकीसा—'लागे जिणरै चखरै अर दुखै जिणरै पीड़', मिनख डावड़ा इतरोई ध्यान नीं राखै के खीला कांपा एकांत में नाखणा। यूं नीं जाणै के कोई रे पग में बैठ जावैला। अर थांई पटेलण जी आकास रा तारा गिणता इज चालो थोड़ो नीचो देखनें चाल्या करो। भले मिनख कह्यो है—नीचो जोयां गुण घणा,

जीव जंत टल जाय।

कांटो पण भागे नहीं, पड़ी वस्तु मिल जाय।

पटेलण—ए सगली कैवण री वातां है काकीसा, उई रे!.........राम रे! मरगी रे म्हैं तो!..........जोग व्है जिको कोनी टलै।

काकीसा—लो अब उठो। म्हारै खांघा रै हाथ राखनें धीरे धीरे चालो देखांणी गांम में आज डाक्टर साब आयोड़ा है, चालो थांरै पट्टी बंधाय दूं।

पटेलण—काकीसा, थे नीं मिलता तो म्हारी भूंडी हालत व्हैती। भगवान थांरै भलो करजो बाई। म्हारी आसीस सूं दूधां न्हावो, पूतां फलो अर करोड़ दीवालो राज्य करो, एक रा इक्कीस व्हो।

काकीसा—(हंसनें) लो, अब उठो तो खरी।

पटेलण—ओह! ओह! अरे राम रे! उई रे!

काकीसा—धीरे.पटेलण जी धीरे! म्हारों खांधो काठो पकड़ लो। अरे हां म्हूं थांनें आ वात तो पूछणी भूल इज गी के के थें दिनूंगे ई दिनूंगे जावै कठै हा?

पटेलण—कठै कांई काकीसा, म्हारै माथै तो अबार भगवान ई रूठोड़ा है। घर में बौहलो कुणवो ठेर्‌यो सो इतरा मिनखां में एकाध तो हर वखत बिमार रैवै इज। दो एक दिनां पे'ली मोटौड़ो छोरो मांदीवाड़ में सूं उठनें हरतो फिरतो व्हियो इज हो के नेंनकिया नें

माताजी तपग्या । तीन दिनां सूँ वापसी आज देखाली दियौ है । दरवाजा आगै हल अर गोमूत घर नें बन्नर माल वणावण नें गधेड़ा री लीद अर नींवड़ा रा पत्ता लावण नें जावती ही के म्हारै वैरी इण खीलै घटता में पूरौ कर दियौ ।

काकीसा—पटेलण जी आ तो घणी दुख री वात वताई । पण चेचक तो एक बिमारी है । इण नें देवी देवता रो रूप देवणौ कोई समझदारी नीं है । जिण भांत हरेक वात वालियां सूँ वलै अर टालियां सूं टलै उणीज तरै आ मातारी वीमारी पण टालियां सूं टल सकै ।

पटेलण —थांनें हाथ जोड़ूं काकीसा म्हारै मूँडागै तो माताजी महाराज री निंदा करौ मती । हे मा ! म्हारै छोटकियै नें ठाडो झोलो दीजे म्हारी माय ! सील सातम रे दिन ठेठ थांन माथै आयनें माजी नें सवा पांच रो प्रसाद चढ़ाय दूँला ।

काकीसा—प्रसाद वाली वात तो म्हनें ई दाय आई पटेलण जी ! उण दिन म्हनें भूलजो मती ना ।

पटेलण —(खांधो पकड़नें धीरे-धीरे चालती थकी) ओह ! ओह ! उई रे !

काकीसा —धीरे चालो सा धीरे ! कहो तो पटेलजी नें बुलाय दूं । वे थानें ढो माथै विठाय नें ले चालेला ।

पटेलण —करलो मसखरियां काकीसा, धाप-धाप नें करलो । इसो मोको फेर नीं आवैला ।

काकीसा—लो, वे देखो रावली चोकी माथै डाक्टर साव एकला इज वैठा दीसै । चालो जल्दी-जल्दी चालो, पछै फेर भीड़ व्है जाएला ।

पटेलण —चालो बाई चालो ।

काकीसा—राम-राम डाक्टर सा'व !

डाक्टर —राम-राम सा राम-राम ! पधारो । इण मा सा रै पग रै कांई व्हैग्यो ?

काकीसा—पटेलणजी रै पग में तो खीलो बैठग्यो डाक्टर सा'ब !

डाक्टर —आओ बैठो पटेलण जी, अबार पट्टी बांध दूं। (घाव देखनें) मामूली घाव है, कोई चिन्ता जिसी बात कोनीं। दो एक दिन में घाव भरीज जावैलो।

(डाक्टर दवाई लगाय ने पट्टी बांवै)

पटेलण —ओह ! ओह ! अरे राम रे उई रे !

डाक्टर —बस, बस, बस लो आ पट्टी बांध नाखी।

पटेलण —(निस्कारो नांख नें हाथ जोड़ती थकी) जुग जुग जीवो डाक्टर बीरा, जुग जुग जीवो। वड़ ज्यूं फलो अर दोब ज्यूं पांगरो। एक रा इक्कीस व्हो।

डॉक्टर—(जोर-जोर सूं हँसे, काकीसा ई हँसे) बस बस पटेलण जी, इतरी आसीस घणी, देस में जनसंख्या पे'लाई मोकली है। एक रै इक्कीस इक्कीस व्हैग्या तो खावैला कांई ?

काकीसा—डॉक्टर सा'ब पटेलणजी रे छोटकिये बेटे नै माताजी निकलग्या है।

डॉक्टर— हाँ भाई, आ तो चिंता री बात है। आज थांरे गांम में घर घर टाबर सूता है। अडोस पडोस रा गांमड़ां में ई चेचक रो घणो जोर है, अर इण में घणो कसूर लुगायां रो है।

पटेलण— लुगायां रो कसूर कांई है डॉक्टर सा'ब ?

डॉक्टर— गांम में चेचक रो टीको लगावण वालो आवै जद थे टाबरां नें लुकाय लो, अर टीको लगावण नीं देवो। पछै जद टाबरां नें चेचक निकलै तो वांरी सार-सँभाल ठीक कोनीं करो। इण सूं चेचक सगला गांम में फैल जावै।

काकीसा लो सुण्यो पटेलण जी ! अबै म्हारी बात याद करो ! म्हैं थानें नीं कह्यो हो के सगला टाबरां रै टीको लगवाय लो। थे मान्या कोनीं अर कैवण लाग्या-ना ए बाई टाबरां रै पीड़ व्है जावै। माताजी महाराज नाराज व्है जावै।

डॉक्टर— थे बैठो पटेलणजी, म्हारी बात ध्यान सूं सुणो ! थेई बैठ जाओ काकीसा (दोनूं जण्यां बैठ जावै) अरे भाई किसा माताजी अर किसा पिताजी ! चेचक तो एक बिमारी है अर टीका सूंई कदेई पीड़ हुई है ? पीड़ तो चेचक निकलै जद हुवै। कई टाबर कडोपा व्है जावै, कई कांणा व्है जावै तो कई आंधा व्है जावै अर कई तो मर जावै। थां सूं कांई छांनी बात है ?

काकीसा—साची फरमावो डॉक्टर सा'ब !

डॉक्टर — इण वास्तै सगळां नें ई सालो साल चेचक रो टीको जरूर लगवाय लेवणो चाहिजे। टीको लगवायां सूं पे'ली बात तो चेचक निकलै इज नीं। अर जे निकलै तो मामूली दांणा निकल नें रैय जावै। बाकी नीं तो चेचक सीतला माता रा गीत गायां सूं रुकै, नीं पूजा पाठ कियां सूं अर नीं ठाडो ठरियो खायां सूं।

काकीसा—जुग जुग सूं गांमड़ां में तो गीत गवीजे—

धेगड़ धींगा करै ओ मैया सीतला अर
म्हांरे टाबरियां नें ठाडा झोला दीजे म्हारी माय।

फेर सालो साल चेत महीनें माता पूजी जावै अर एक दिन ठंडो बासी खावो जावै। जे इण बातां सूं चेचक रुक जावती तो कदेई रुक जावती।

डॉक्टर — दूजी बात जे घर में कदास कोई नें माता निकल इज जावै तो पछै उणरो पूरो जापतो राखणो चाहिजे। चेचक एक चेपी रोग

है. ओ एक सूं दूजा नें लाग जावै। ओ इज कारण है के ओ रोग फैले जद घणी जोर सूं फैले। गांमरा गांम तबाह करदे।

पटेलण— लारला महीना में गांम में सूं पचास साठ टाबर जावता रह्या डॉक्टर सा'ब !

डॉक्टर— इण वास्तै इज म्हूं वांनें कैवूं पटेलणजी के पाणी पोनी पाल बांवणी चाहिजै। नीं तो झाली झाल लाग्यां पाछै कोई कारी नीं लागै। चेचक रा रोगी नें घर में इसी ठौड़ एकांत में राखणी चाहिजै के जठै घणी हरफिरनी हुवै। उणरा कपड़ा चर बरतन न्यारा राखणा चाहिजै। खासकरनें जिण वखत वण सूखण लागै अर टिकड़ियां खिरण लागै, उण वखत रोग फैलण रो ज्यादा डर रैवै। इण वास्तै टाबरां नें रोगी सूं आगा राखणा चाहिजै।

काकीसा— सुण्यो पटेलणजी ! दरवाजा आगै हल आडो नांख्यां सूं अर मींगणां री माला टरयां सूं कीं नीं हुवणी है। डॉक्टर सा'ब कही जिण वातां रो पूरो ध्यान राखजो।

पटेलण— वात तो ठीक है काकीसा ! म्हूं तो इतरा दिन सफा अंधारा में इज ही।

डॉक्टर— खैर अबै भूल्या जठा सूं ई गिणो, कैवै के "भोतो" मोड़ो लायो के खावै तो हाल वेगो इज है।' सो अदै सूं इज ध्यान राखो। गांमरी सगली मायां बायां नें समझाय दो के सगला टाबरां रै टीका लगवाय ले।

काकीसा—वाह डॉक्टर सा'ब वाह ! आज तो जबरी वातां बताई। कियां पटेलणजी, थांरै कीं हीयै ढूकी के नीं ?

पटेलण—काकीसा कांई बतावूं, म्हारी तो आज आंख्यां ऊघड़गी। डॉक्टर सा' बरी वातां तो म्हारै अंगो अंग लागी।

डॉक्टर— तो थे अवै घरै जावो । म्हूं थोड़ी देर में थांरै टाबर नैं देखण नैं आवूंला ।

पटेलण— जुग-जुग जीवो डॉक्टर वीरा, जुग-जुग जीवो । वड़ ज्यूं फलो, दोब ज्यूं पांगरो, एक रा इक्कीस हुवो !

डॉक्टर— (जोर सूं हंसे)

(पड़दो पड़ै)

हर की पेड़ी पर

राधाकृष्ण शर्मा

सेठ—नारायण, नारायण, नारायण ! कुम्भले री मां ! देख, आ है हर की पेड़ी ! भगवान् रामचिन्दरजी अठै ही दिशरथजी रा फूल तिराया हा ! आज आपरणूं जमारो भी सुधरग्यो ।

सेठानी—कुम्भले रा बापूजी ! कांईं फूल तिरायां बिना ही जमारो सुधरग्यो के ?

सेठ—ए बावली तूं समझी कोन्यां । फूल किस्या इब जीवता ही तिरावां—कोई हाथ घालर तो मरीजे कोन्यां और इंयांही थारी मरजी हुवे जणा स लै मैं तने गलगोतो द्यूं और तूं मने दे जिको च्यार मिनटां में पापो कट ज्याग । मरेड़ा का फूल तो से ही बुआवे है । आपां जीवतां ही बुआद्यां "गुड़ लागे न फिटकरी रंग आवे चोखो" ।

सेठाणी—ना ना कुम्भले रा बापूजी । थारी अकल कठै भैंस चरने लागगी के । हाल आपणे लारे कांई कोन्या—कुम्भलो है, कुम्भले की बीनणी है, ब्या रां टाबर टोली है । सै आपांने चोखी तिरयां पुंच्यासी । आपां क्यूं उंतावल करां ।

सेठ—अछ्या जणां कुम्भले री मां जियां थारी मरजी ।

ज्योतषी—दया धरम रो मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्राण ।
अंगी चोली देगी दान, आप करना प्रभु गंगा स्नान, जय गंगा ।।
आपको धरम पुन्न बढ़सी सेठजी—कोई भूखा नंगा नै कपड़ो लत्तो,

आनू पावलो दिरावो—हर की पेड़ी पर खड़या हां । म्हे ही मारवाड़ का ज्योतषी हां ।

सेठ—जा जा बाबा ! म्हे किस्या धरम पुन करने आया हां । म्हारे गेल मत पड़ ना । बठै सदाबरत बँटे है, बठै जा ना । हर की पेड़ी पर खड़्या हां तो म्हारे पगां पर खड़्यां हां, तने कांइ जोर आवे है ।

ज्योतषी—वाह वाह सेठजी ! आच्छो मन मीठो कर्‌यो । तीरथां पर आकर अर्वान की बातां कोन्यां कर्‌या करे है ।

सेठ—म्हाने मत उपदेश दे ना । थारो गेलो ले बाबा ! देख कुम्मले री मां ।

सेठानी—हम्मे कुम्मले रा बापूजी ।

चणेवाला (आता है)—बन्दर मच्छी के लिए चने ले जाइये चने ।

सेठ—देख कुम्मले री मां ! आंका कयां भोगना किस्त खाया हैं । आजकाल तो मिनखां नै ही चीणा कोन्यां मिलै । चीणी की तो बात ही ओर है । आने हिया का फूट्या नै बन्दर मच्छी सूझै है । कुण केव आने ! कोई कुवे में ही भांग पड़गी ।

सेठानी—हम्मे कुम्मले रा बापूजी ।

हरिद्वार का पण्डा—सेठ ओर माई ! यह हरिदुआर की जल की झारी है जिसमें गंगोत्री जमनोत्री का पवित्र जल भरा है । चार धाम में श्रेष्ठ रामेश्वर जाकर भगवान शंकर पर चढ़ाने से प्राणी वैकुण्ठ धाम को जाता है । एक संकल्प चार आने का लीजिये । हर की पेड़ी पर स्नान करने आये हैं ।

सेठ—देख कुम्मले री मां । कठै तो रामेसर ओर कठै हरिदुआर । ओ बावडो बठै जार पाणी चढाणो । मनै ही ओका बतावे है । पावल्यां किसी रेतां में उगे है । एक घड़ी तांई गिट्टी लगावां जणा कांई एक पावली को हिसाब-किताब बेठ है । कोन्यां चाहिजे बाबा, थारो गेलो लै ।

बंगाली भिखारी—सेठ एक पोयसा प्रानां के श्रो देन ! प्रामी बूब दुखी लोक । एक टु दोही दिन्‌ना खाबार खेत कोरे । प्रामी प्रापान देशे प्रासछी । प्रामार छेले पुले मोर मारे गिये छे । प्रापोनार भोगोबान भालो कोरबे ।

सेठ—भाले·हूं किस्यो इव म्हारो माथो फोड़सी के ? कोई जबरदस्ती है ? कोन्यां देवां पड़स्यो कोन्यां देवां । किसे किसे को मन राखां । उणिहारा हूं संसार भर्‌यो है । नुंई नुंई खोपड़यां आवे है नुंई नुंई देख कूम्भले री मां ।

सेठाणी—हम्मे कूम्भले रा वापूजी ।

भोपा—(नाचता हुआ आता है) ।

> नाम रहेगा उन्हीं का जो नर, धरम में धन को लायेगा ।
> पैसे का कजूस जगत में, जोड़ जोड़ मर जावेगा ।
> हाथ से अपने खाया न खरचा, अगर जमा जर किया तो क्या ।
> ऐसा मक्खीचूस आदमी, अगर सौ वरस जिया तो क्या ?
> यहा से अपयश लेकर, वह नर जम की मार वहां खायेगा ।

सेठ—देख कूम्भलै री मां ! आहू को सांड दड़ूके जियां दड़ूके । आं गोदां उं कुण माथो लगावे । च्यारां कानी काल का ही काल का टूटेड़ा नजर आवे है । मंगतपणे को ही कोई सूमार है ! तीरथां में आच्छो भेलवाड़ो कर्‌यो । ए तो इं हर की पेडी ने आपके घर की पेडो समझ राखी है घर की पेडी । चाल चाल कठे ही मूंडो लकोर बैठां ! मैं सिमझग्यो । आं सगलां री निजर म्हांकाली अंटी पर अटक री है ।

सेठानी— हम्मे कूम्भलै रा वापूजी, हम्मे कूम्भलै रा वापूजी । चालो; चालो ।

(पटाक्षेप)

लेखक

अजीतसिंह 'बन्धु', रा० उ० मा० वि०, लूनी, जोधपुर;

अमोलकचन्द जांगीड़, रा० उ० मा० वि०, बिसाऊ, झुंझुनू;

ओम अरोड़ा, आर्य हायर सेकण्डरी स्कूल, गंगानगर;

करणीदान बारहट, रा० उ० मा० वि०, झुंझुनू;

कुन्दनसिंह सजल, रा० मा० वि०, गुरारा, सीकर;

गोपाल राजस्थानी, उमेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;

चतुर कोठारी, राजसमंद, उदयपुर;

नन्दन चतुर्वेदी, रा० उ० मा० वि०, गुमानपुरा, कोटा;

नाथूलाल गुप्त, रा० उ० मा० वि०, छीपा बड़ौद, कोटा;

नृसिंह राजपुरोहित,

वंशी बावरा, रा० मा० बा० वि०, छोटी सादड़ी, चित्तौड़;

भगवतीलाल व्यास, विद्याभवन उ० मा० वि०, उदयपुर;

भँवरसिंह सहवाल, रा० शि० प्र० वि०, मसूदा, अजमेर;

महावीर प्रसाद शर्मा 'जोशी', रा० प्रा० वि०, गोरीर,
वाया खेतड़ी, झुंझुनू;

मीठालाल खत्री, रा० उ० प्रा० वि०, तवाव, जालोर;

मोहनलाल 'त्यागी', रा० उ० प्रा० वि०, उमेदपुरा, फलोदी, जोधपुर;

मोहनसिंह, रा० उ० मा० वि०, झुंझुनू;

रघुनाथसिंह, पीरामल उ० मा० वि०, बगड़, झुंझुनू;

राधाकृष्ण शर्मा, सरस्वती शिशु मंदिर उ० प्रा० वि०,
१२ विनोबा बस्ती गंगानगर;

रामसहाय विजयवर्गीय, विजयवर्गीय मोहल्ला
पास, केकड़ी, अजमेर

रामस्वरूप 'परेश', बी० एल० प्रा० वि०, द

रामेश्वर दयाल श्रीमाली, रा० उ० प्रा० वि

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा, विवेक कुटीर, सुजान

सांवर दइया, द्वारा कानीराम सागरमल, दया